(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 55, अंक 11, मई, 2020
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

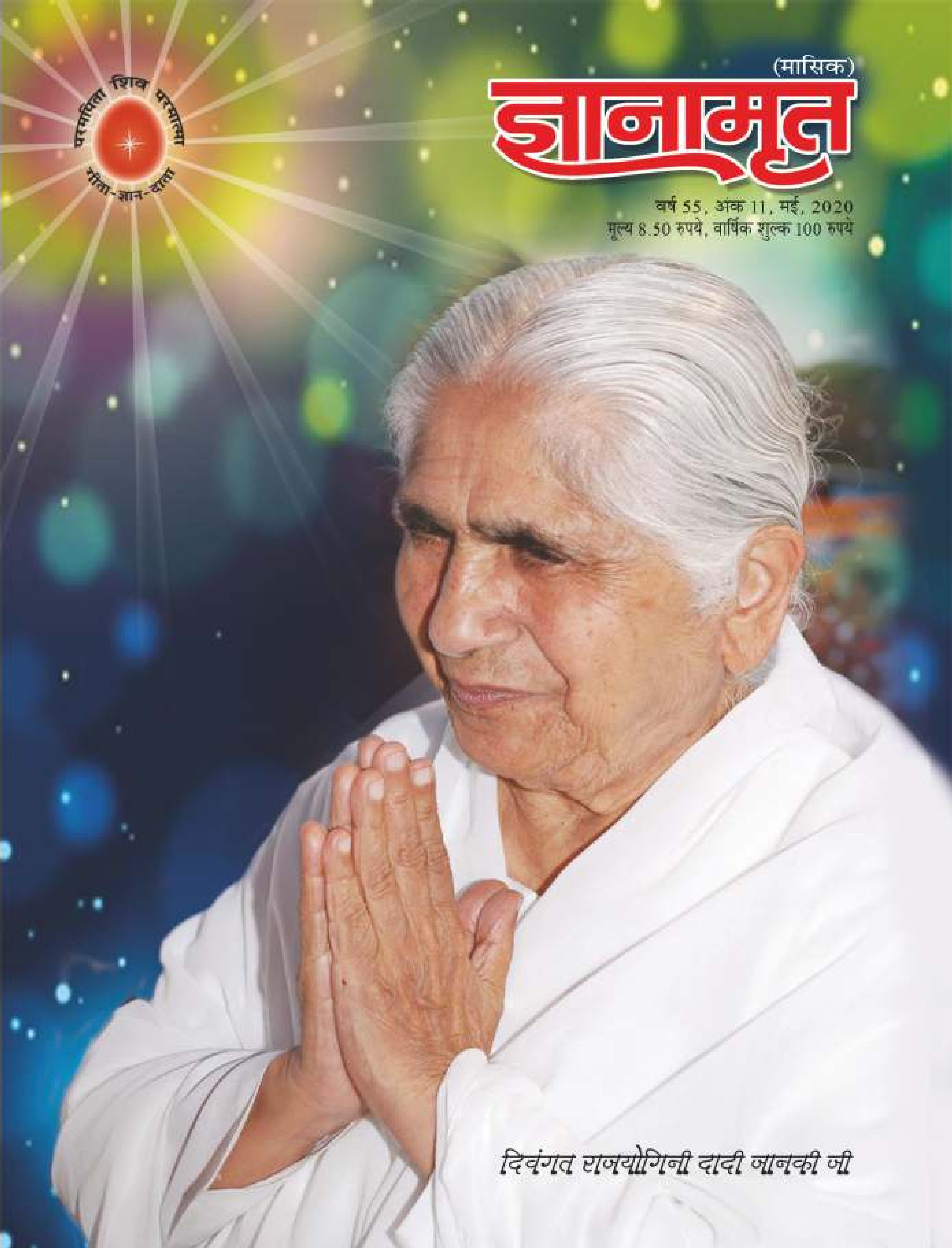

दिवंगत राजयोगिनी दादी जानकी जी

देश-विदेश के गणमान्य व्यक्तियों के साथ राजयोगिनी दादी जानकी जी 1. भारत के महामहिम राष्ट्रपति माननीय रामनाथ कोविन्द 2. भारत के पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गिय ए.पी.जे. अब्दुल कलाम 3. भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी 4. भारत के पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गिय ज्ञानी जैल सिंह 5. उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ 6. भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा देवी सिंह पाटिल 7. भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गिय राजीव गांधी 8. राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे सिंधिया 9. लोकसभा अध्यक्ष माननीय ओम बिरला 10. भ्राता लालकृष्ण आडवाणी 11.भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गिय पी.वी. नरसिम्हा राव तथा राजस्थान के पूर्व राज्यपाल एम. चेन्ना रेड्डी 12. भारत के पहले चीफ ऑफ डिफेंस जनरल बिपिन रावत 13. भ्राता रवि शंकर प्रसाद, कानून एवं न्याय मंत्री, भारत सरकार 14. बहरीन में गुणमान्य व्यक्तियों के साथ दादी जी 15. पूर्व रक्षामंत्री स्वर्गिय जॉर्ज फर्नांडिस 16. मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान

ईश्वरीय दूत का महाप्रयाण

ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी अपने दिव्य व भव्य जीवन के 104वें वर्ष में इस लौकिक दुनिया को छोड़कर 27 मार्च, 2020 की सुबह 2 बजे अलविदा हो गई। उनके पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार शांतिवन, आबू रोड में ईश्वरीय याद के साथ किया गया। दादी जानकी के सदा अंग-संग रही दीदी हंसा ने उन्हें मुखाग्नि दी।

46 हजार ब्रह्माकुमारी बहनों की नायिका

शिव बाबा की शक्ति व राजयोग मेडिटेशन का ही कमाल है कि दादी जानकी ने अपने आपको इतना सशक्त बना लिया था कि वे उम्र को मात देती रहीं । ये योग की ही ताकत थी कि दादी 104 साल की उम्र में भी विश्वभर का भ्रमण करती रहीं, 46 हजार से भी अधिक बहनों की नायिका बनकर रही और 12 लाख भाई-बहनों की प्रेरणा स्रोत रही। दादी की उपस्थिति मात्र से ही सभी में उत्साह भर जाता था। दादी ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की शान और जान रही हैं।

मात्र तीसरी कक्षा तक पढ़ी दादी जानकी हर दिन 12 घंटे जनसेवा में सक्रिय रहती थीं। अमृतवेले 4 बजे से जागकर, राजयोग-ध्यान करना उनकी पहली दिनचर्या थी। उम्र के इस पड़ाव में भी उनका उत्साह युवाओं जैसा रहा। उन्हें 80 प्रतिशत चीजें मौखिक याद रहती थीं। दुनिया के 140 देशों में फैले प्रजापिता

अमृत-सूची

- ईश्वरीय दूत का महाप्रयाण 3
- मेरी प्रथम आध्यात्मिक शिक्षिका (सम्पादकीय) 6
- मैसेंजर ऑफ गॉड 9
- राजयोगिनी दादी जानकी जी के देहावसान पर भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा शीर्षस्थ नेताओं के शोक सन्देश 10
- राजयोगिनी दादी जानकी जी पूर्व मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारीज़ जीवन-परिचय तथा प्राप्त सम्मान-अवार्ड 12
- बाबा से समीप सम्बन्ध जुड़वाने वाली दादी जानकी 16
- दादी जी हमारी (कविता) 21
- सदा एकाग्र-मन और एकरस स्थिति में रहने वाली दादी जानकी 22
- ऐसी थी दादी हमारी 23
- आश ना की मान की (कविता) 25
- दादी जी ने मरजीवा बनना सिखाया 26
- सचित्र सेवा-समाचार 27
- दादी जानकी जी का अलौकिक व्यक्तित्व 28
- सचित्र सेवा-समाचार 30
- दिल की मित्र दादी जी 32
- माँ तुझे सलाम ! 34

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी का जीवन अध्यात्म का प्रेरणापुंज रहा है। यही नहीं, विश्व की सबसे स्थिर मन की महिला का वर्ल्ड रिकार्ड भी दादी जानकी के नाम ही रहा।

अनवरत जारी रही आध्यात्मिक साधना

दादी जानकी जी ने राजयोग के अभ्यास से खुद को इतना परिपक्व, शक्तिशाली, महान और आदर्शवान बना लिया था कि उनका एक-एक वाक्य, महावाक्य हो जाता था। उन्होंने योग से मन इतना संयमित, पवित्र, शुद्ध और सकारात्मक बना लिया था कि वे जिस समय चाहें, जितनी देर चाहें, जिस विचार पर चाहें, स्थिर रह सकती थीं। यही कारण है कि जीवन के 104 बसंत पार करने के बाद भी उनकी ऊर्जा और उत्साह देखते ही बनता था। केवल भारत ही नहीं बल्कि विश्व के 140 देशों में अपनी मौजूदगी से दादी ने लाखों लोगों की जिंदगी में सकारात्मकता का संचार किया। लोग देखकर, सुनकर, मिलकर प्रेरित होते थे, उनका एक-एक शब्द लाखों भाई-बहनों के लिए मार्गदर्शक और पथप्रदर्शक आज भी बन रहा है।

सिंध प्रांत (अब पाकिस्तान) के हैदराबाद में 1 जनवरी सन् 1916 में दादी जानकी का जन्म हुआ था। उन्हें भक्ति-भाव के संस्कार बचपन से ही मां-बाप से विरासत में मिले। लोगों को दु:ख, दर्द, जातिवाद और अंधश्रद्धा के बंधन में बंधे देख उन्होंने अल्पायु में ही सामाजिक परिवर्तन का दृढ़ संकल्प किया। साथ ही अपना जीवन समाज कल्याण और विश्वशांति के लिए अर्पण करने का साहसिक फैसला कर लिया। माता-पिता की सहमति के बाद 21 वर्ष की आयु में आप ओम् मंडली (ब्रह्माकुमारीज संस्था का पहले यही नाम था) से जुड़ गईं थीं।

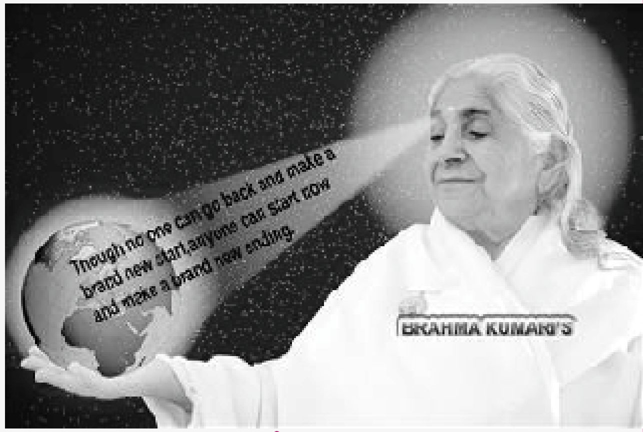

गुप्त राजयोग-साधना

ब्रह्माकुमारीज के संस्थापक दादा लेखराज, जो बाद में ब्रह्मा बाबा के नाम से ख्यातिलब्ध हुए, के सान्निध्य में दादी ने 14 वर्ष तक गुप्त राजयोग-साधना की। कराची में 14 वर्षों तक एक साथ 300 भाई-बहनों ने प्रेम और स्नेह से रहते हुए खुद को इस विश्व विद्यालय के चार विषयों–ज्ञान, योग, सेवा और धारणा में परिपक्व बनाया। वर्ष 1950 में संस्था कराची से माउंट आबू, राजस्थान में स्थानांतरित हुई जहाँ से विश्व सेवाओं का शंखनाद हुआ और अध्यात्म की अलख को विश्व के कोने-कोने में पहुंचाया गया।

चरित्र निर्माण के रोपे बीज

वर्ष 1970 में दादी जानकी पहली बार विदेश की जमीं पर मानवीय मूल्यों यानि चरित्र निर्माण का बीज रोपने के लिए गई थीं। स्नेह, अपनेपन और मूल्यों की भाषा से विदेशी जमीं पर उन्होंने भारतीय संस्कृति को स्थापित कर दिया। धीरे-धीरे यह कारवां बढ़ता रहा। आज विश्वभर में लोग भारतीय अध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन को दिनचर्या में शामिल कर जीवन को नई दिशा दे रहे हैं जिसमें दादी जानकी का अहम योगदान है। दादी बड़े सवेरे उठ जाती थी । राजयोग मेडिटेशन के साथ आध्यात्मिक मूल्यों का मंथन,

लोगों से मिलना-जुलना आदि अपने तय समय पर ही करती थी। इसके बाद दिन में कुछ आराम कर वापस सायंकालीन ध्यान मेडिटेशन और फिर रात्रि 10 बजे तक सो जाती थी।

स्वच्छता मिशन की ब्रांड एंबेसेडर

ब्रह्माकुमारीज संस्था की पूरे विश्व में साफ-सफाई और स्वच्छता को लेकर विशेष पहचान रही है। देश में स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने दादी जानकी को स्वच्छ भारत मिशन का ब्रांड एंबेसेडर भी नियुक्त किया हुआ था। दादी के नेतृत्व में पूरे भारतवर्ष में विशेष स्वच्छता अभियान भी चलाए गए।

दादी ने 140 देशों में दिया ईश्वरीय सन्देश

दादी जानकी ने विश्व के 140 देशों में भारतीय प्राचीन संस्कृति, आध्यात्मिकता एवं राजयोग का संदेश पहुंचाया है। दादी ने सबसे पहले लंदन से ईश्वरीय संदेश की शुरुआत की। यहां वर्ष 1991 में कई एकड़ क्षेत्र में फैले ग्लोबल को-ऑपरेशन हाउस की स्थापना की गई। हजारों की संख्या में संस्था से जुड़े भाई-बहनों ने दादी के साथ सहयोग का हाथ बढ़ाया। दादी जानकी ने वर्ष 1970 से वर्ष 2007 तक 37 वर्ष विदेशों में अपनी सेवाएं दीं। इसके बाद वर्ष 2007 में संस्था की तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि के शरीर छोड़ने के बाद आपको 27 अगस्त, 2007 को ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका नियुक्त किया गया। तब से लेकर जीवनपर्यन्त आप लाखों लोगों की प्रेरणापुंज बनी हुई थीं।

सादा खाना खाती थी दादी

दादी जानकी अपने शरीर को ठीक रखने के लिए तथा खुद को हल्का रखने के लिए सुबह नाश्ते में दलिया, उपमा और फल लेती थी। दोपहर में खिचड़ी, सब्जी लेना पसंद करती थी। रात में सब्जियों का गाढ़ा सूप पसंदीदा आहार था। दादी वर्षों से तेल-मसाले वाले भोजन से परहेज करती थी। उनका भोजन करने का समय भी निर्धारित था। दादी का कहना था कि हम जैसा अन्न खाते हैं वैसा हमारा मन होता है इसलिए भोजन सदा परमात्मा की याद में ही करना चाहिए। दादी जानकी के अव्यक्त होने के समय देशभर में लॉक डाउन के चलते उनके अंतिम संस्कार के समय देश-दुनिया के वे लाखों भाई-बहनें नहीं पहुंच सके जिनकी आंखों का सितारा दादी जानकी जीवन भर रही। ब्रह्माकुमारीज संस्था के वरिष्ठ भाई-बहनें – बीके निर्वैर भाई, बीके बृजमोहन भाई, बीके मृत्युन्जय भाई, रतनमोहिनी दादी, मुन्नी बहन, जयंती बहन आदि उनकी अंतिम यात्रा के साक्षी बने। ■■■

टांग वो खींचता है जो हमसे नीचे रहता है

सम्पादकीय

मेरी प्रथम आध्यात्मिक शिक्षिका

सन् 1957 में मैं आदरणीया दादी जानकी जी से पहली बार मिला, उस समय पटियाला (पंजाब) में थापर इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ रहा था। मेरे साथ ओमप्रकाश भाई (इंदौर जोन इंचार्ज) भी पढ़ते थे। वे अम्बाला छावनी से ही दादी जानकी जी से ज्ञान लेकर आये थे। उन्होंने मुझे ज्ञान दिया, ज्ञान बहुत अच्छा लगा और मैं ज्ञान में चल पड़ा। पहले हम दोनों होस्टल में रहते थे परन्तु ज्ञान से बनी धारणा के अनुसार शुद्ध सात्विक भोजन खाना आरम्भ किया तो मैंने होस्टल छोड़ दिया और एक मकान किराये पर लेकर अपने हाथों से भोजन बनाना आरम्भ कर दिया। उसी मकान में हम योग करते थे और ईश्वरीय सेवा भी करते थे। उन दिनों अम्बाला छावनी, अमृतसर, श्रीहरगोविन्दपुर और शाहबाद – ये चार सेंटर ही पंजाब में थे। पूरे भारत में भी बहुत कम सेवाकेन्द्र खुले थे। तभी दादी जानकी जी का पटियाला में आना हुआ। उन्होंने हमें देखा कि ये खुद ही खाना भी बनाते हैं, पढ़ाई भी करते हैं और ईश्वरीय सेवा भी करते हैं। तब दादी कुछ दिनों तक हमारे पास रहीं, हमारी पालना की, अपने हाथों से भोजन बनाकर खिलाया। दो-चार स्टूडेण्ट और भी ज्ञान में चले हुए थे। दादी जी ने एक दिन सिन्धी कढ़ी और साबूदाने का हलवा बनाकर बड़े प्यार से ब्रह्मा भोजन खिलाया।

ईश्वरीय सेवा की धुन

उस समय बहनें बहुत थीं, सेवाकेन्द्र कम थे, जिज्ञासु भी बहुत कम थे। एक जिज्ञासु भी निकलता था तो बाबा को समाचार मिल जाता था कि अमुक स्थान पर बच्चे का रूहानी जन्म हुआ है। दादी जानकी जी सेवार्थ कहीं भी, किसी भी साधन के द्वारा जाने के लिए सदा तत्पर रहती थीं। हम साइकिल पर होते थे और दादी जी साइकिल रिक्शे में। पटियाला में कई स्थानों पर हमने भाषण करवाये। गुरुद्वारे में, महिला समितियों में कई स्थानों पर वे गये। उन्हें धुन रहती थी, ईश्वरीय सेवाओं की। कभी यह नहीं देखती थीं कि छोटी जगह है और थोड़े लोग हैं, नहीं! बस, बाबा की सेवा करनी है।

परिस्थिति के अनुकूल ढलने की अद्वितीय क्षमता

हमारे एक मित्र थे चंडीगढ़ में कृष्णलाल मनचन्दा। अन्य दोस्तों के साथ-साथ हमने इनको भी बता रखा था कि भगवान धरती पर आ चुके हैं और वर्तमान संगमयुग पर उनका कार्य चल रहा है।

मनचन्दा ने हमें कहा था कि जब आपकी कोई बहनें आयें तो उन्हें चण्डीगढ़ में जरूर ले आना। दादी जानकी जी को हम चण्डीगढ़ ले गये। कई स्थानों पर वहाँ भी भाषण करवाये। सेवा करते-करते रात्रि 10 बजे हम अम्बाला सीटी पहुँचे। अम्बाला छावनी सेण्टर पर पहुँचने तक और रात हो जानी थी इसलिए रात एक धर्मशाला में गुजारी और सुबह दादी और हम सेण्टर पर पहुँचे। ये बातें मैं इसलिए बता रहा हूँ कि ईश्वरीय सेवा के लिए हर परिस्थिति के अनुकूल ढलने की दादी जी में अद्वितीय क्षमता थी।

यज्ञ पहले, हम बाद में

दादीजी की त्याग भावना, यज्ञ के प्रति अटूट प्यार, बाबा के प्रति अतिशय जिगरी स्नेह हमने आँखों से देखा। जब वे पटियाला में रहती थीं और कोई कुछ भी वस्तु ले आता था तो कहती थीं कि पहले यज्ञ में दो, बाबा को भेजो, यज्ञ पहले, हम बाद में, उनका मन्तव्य हमेशा ऐसा होता था। दादी जी की सादगी अविस्मरणीय रहेगी। उन्हें हम बैलगाड़ी में अपने गाँव भी ले गये, जहाँ वे हमारे सारे परिवार से मिलीं। परिवार वालों को थोड़ा परिचय तो पहले से ही दिया हुआ था परन्तु दादी जी के जाने से हमारी माता जी-पिताजी और भाई-बहनें आदि सब ज्ञान में चल पड़े। दादीजी का सभी पर बड़ा रूहानी प्रभाव पड़ा था।

रूहानियत की पराकाष्ठा

एक बार हमारे सारे परिवार को बाबा ने मुम्बई में बुलाया था। बाबा तो लौटकर मुधवन (माउण्ट आबू, मुख्यालय) वापिस आ गये परन्तु मुझे दादी जानकी जी के साथ 15 दिनों तक पूना में रहने का अवसर मिला। पूना में हम विभिन्न संस्थानों से, सेवा के लिए समय लेकर आते थे और दादी जानकी जी तथा उनकी सहयोगी बहनें भाषण करने जाती थीं। तब बहुत सेवा हुई। दादी जी को और मुझे भी बहुत अच्छा लग रहा था। मेरा मन कहता था कि मैं पूना में दादी जी के साथ ही रह जाऊँ। दादी जानकी फेयर रोड सेंटर पर रहती थीं, वहां से तीन-चार किलोमीटर पैदल चलकर क्वार्टरगेट सेवाकेन्द्र पर सुबह की क्लास कराने जाती थी। क्लास से पहले वे मुझे कुछ ज्ञान-रत्न सुनाने की ट्रेनिंग भी देती थीं। उसके बाद दादी जी मुरली सुनाती थीं। दादी जी में रूहानियत की पराकाष्ठा थी। उन दिनों ज्ञान की बातें आज की तरह इतनी विस्तार में नहीं थीं परन्तु किसी भी सभा में दादी जी की रूहानियत ही लोगों को संतुष्ट

कर देती थी। किसी का कोई प्रश्न उठता ही नहीं था।

दादी जी की हॉबी

शांतिवन में उनकी रात्रि क्लास में मैं अवश्य हाजिर रहता था। मुझे लगता था कि ये दिन भी हाथ से निकल जाएंगे। मुझे सामने बैठा देखकर दादी कई बार स्टेज पर बुला लेती थी और कहती थी कि आत्म, कुछ पूछो? एक बार मैंने दादी जी से पूछा, दादी जी, आपकी हॉबी (शौक) क्या है ? दादी जी सोचने लगीं कि क्या बताऊँ? तब मैंने ही कहा कि दादी जी, आपकी हॉबी है वारिस (बाबा के अनन्य बच्चे) तैयार करना। मैंने लन्दन में भी देखा और भारत में भी, दादी जी ने तन, मन, धन, जन से भगवान पर कुर्बान जाने वाले बच्चों का विशाल समूह तैयार किया।

दादी जी का वरदान

एक अन्य प्रसंग में जब मैं दादी जी के साथ स्टेज पर था और दादी जी ने कहा कि कुछ बोलो, तो मैंने दादी जी को कहा कि मुझे आपसे एक वरदान चाहिए। दादी जी ने पूछा, बोलो कौन-सा? मैंने कहा, दादी जी, जब मैं शरीर छोड़ू तो मुझे ज्यादा तकलीफ ना हो। दादी जी ने कहा, तथास्तु।

मान-मर्तबे से उपराम

दादी जी बाप समान गुणों से भरपूर थीं। हम कई विशेष मेहमानों को दादी जी से मिलाने ले जाते थे, बड़े ही सहज भाव से दादी मिलती थीं, सौगातें देती थीं। उन्हें हर प्रकार से संतुष्ट और भरपूर करके भेजती थीं। मुझे गर्व है कि मेरी पहली आध्यात्मिक शिक्षिका दादी जानकी जी थीं। एक बार जब मैं उनसे टोली ले रहा था तब उन्होंने भी कहा था कि आत्म (आत्मप्रकाश भाई) मेरा पहला स्टूडेंट है। उनकी सादगी, त्याग और सरलता की छाप हम पर भी गहरी लगी है। उनसे हमने बहुत कुछ सीखा है। न मान चाहिए, न शान, न मर्तबा, न मनी (धन)। इन सबसे उपराम थीं दादी जानकी जी।

जैसे दिल में बाबा की याद है, ऐसे ही दिल में उनकी याद बनी हुई है और बनी रहेगी। परम सौभाग्य है कि ऐसी महान दादी जी से मार्गदर्शन लेने का सुअवसर मिला। शान्तिवन में भी कई बार प्रिन्टिंग प्रेस में अचानक आ जाती थीं। न्यू ज्ञानामृत प्रेस में भी कई बार बिना किसी कार्यक्रम के आ जाती थीं, हमें भी और श्रमिकों को भी टोली खिला कर जाती थीं। जब कभी वे किसी पुस्तक या अन्य सामग्री के प्रकाशन के लिए कहतीं थीं तो मैं इतना सम्मान देता था कि मेरे लिए तो दादी जी का आदेश, बाबा का आदेश है। दादी जी का हर आदेश मैं तुरन्त पूरा करता था। दादी जी साकार से हमारे बीच से चली गई हैं परन्तु उनकी सूक्ष्म उपस्थिति, उनके शक्तिशाली प्रकम्पनों के रूप में, उनकी शिक्षाओं के रूप में अब भी हमारे साथ है। दादी जी को शत-शत नमन! ■■■

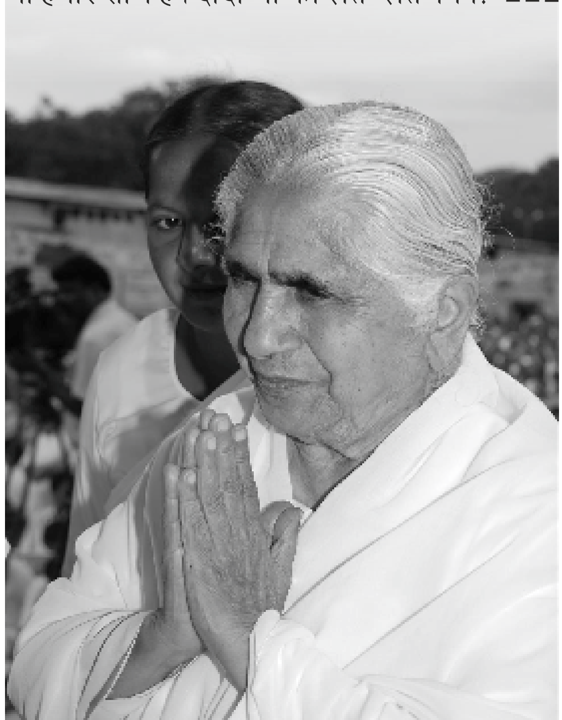

मैसेंजर ऑफ गॉड

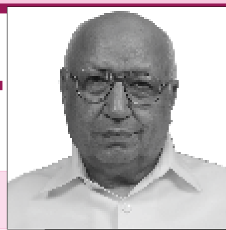

■■■ ब्रह्माकुमार बृजमोहन, दिल्ली

शिव बाबा ने ब्रह्मा बाबा को रचा विश्व परिवर्तन के लिए और ब्रह्मा बाबा ने साकार रूप में पालना कर अष्ट रत्नों को चुना। अष्ट रत्नों में एक मुख्य रत्न दादी जानकी थीं। शिव बाबा ने जब यज्ञ की स्थापना की तभी से दादी यज्ञ में आईं और अंत तक सेवारत रहीं।

हम दादी को मैसेंजर ऑफ गॉड का टाइटल दे सकते हैं। परमात्मा के संदेश को उन्होंने सारे विश्व में पहुंचाया। दादी जी को अंग्रेजी पूरी तरह नहीं आती थी फिर भी बाबा ने कहा, जाओ विदेश में सेवा करो। यहां दुनिया की भाषा की बात नहीं है, प्रेम की भाषा से, नैनों की भाषा से, भावना की भाषा से और सबसे अधिक शुभ संकल्प की भाषा से दादी जी ने 137 देशों में जाकर बाबा के बच्चों को ब्रह्माकुमार-कुमारी बनाया। यह बहुत बड़ी बात है। दुनिया में शायद ही ऐसा कोई धर्मनेता होगा, खासतौर पर महिला के रूप में, जिन्होंने सारे विश्व के भिन्न-भिन्न देशों, भिन्न-भिन्न वर्गों के नेताओं जैसे राजनीतिक नेता, धार्मिक नेता, वैज्ञानिक आदि को ईश्वरीय संदेश दिया हो। मेरे मन में एक तस्वीर उभर रही है जिसमें दादी अरब के अनेक शेखों के बीच में खड़ी है। प्रेम की भाषा, भाईचारे की भाषा हर एक तक पहुंचती है, यह उसका प्रमाण है।

एक बार की बात है, मैं दिल्ली, पांडव भवन में अपने ऑफिस से किसी को सुबह-सुबह फोन कर रहा था ऊंची आवाज़ में ताकि सामने वाले को ठीक सन्देश पहुंचे। अचानक किसी ने मुझे कहा, आपको दादी जानकी बुला रही है। दादी जी साथ के कमरे में ठहरी हुई थी। मैंने सोचा, मैं ऊंची आवाज में बोल रहा हूँ शायद इसीलिए दादी ने मुझे बुलाया है। मैंने जाकर अपना पक्ष रखा कि सुबह-सुबह संेटर वाले भाई मिल जाते हैं इसलिये फोन कर रहा था। दादी जी ने कहा, मैंने इसलिए नहीं बुलाया, मैंने इसलिए बुलाया है कि आप जहाँ भी फोन कर रहे हो वह सफल हो। तो मेरी आंखों में आँसू आ गए कि दादी एक ऐसी दादी है जो हर बात में, हर बच्चे की सफलता की इतनी शुभचिंतक है। ■■■

स्थायी अमीरी का अनुभव करने के लिए उन चीजों को जुटाते जाइये जिन्हें खरीदा नहीं जा सकता

राजयोगिनी दादी जानकी जी के देहावसान पर भारत के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा शीर्षस्थ नेताओं के शोक सन्देश

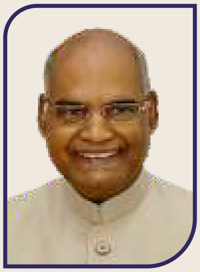

ब्रह्माकुमारीज संस्था की प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी जी के निधन के बारे में सुनकर अत्यंत दुख हुआ। अध्यात्म, समाज कल्याण और विशेष रूप से महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में उनका अमूल्य योगदान रहा है। उनके अनगिनत श्रद्धालुओं के प्रति मेरी शोक-संवेदनाएं।

- रामनाथ कोविंद, राष्ट्रपति

दादी जानकी ने अपने साथ दूसरों का सकारात्मक बदलाव किया है। महिलाओं के सशक्तिकरण में उनका प्रयास उल्लेखनीय था। भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

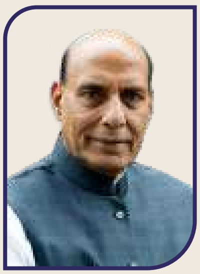

ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी के देहावसान के समाचार से मुझे गहरी वेदना हुई। उन्होंने अपना सारा जीवन समाज की सेवा और उसके सशक्तिकरण के लिए खपा दिया। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व हमें नि:स्वार्थ भाव से समाजसेवा की प्रेरणा देता है।

- राजनाथ सिंह, रक्षा मंत्री, भारत सरकार

ब्रह्माकुमारीज संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के निधन पर मेरी भावपूर्ण श्रद्धांजलि। वह हमारे समय की सबसे प्रेरणादायक आध्यात्मिक नेताओं में से एक थीं। मेरे विचार उनके लाखों अनुयायियों के साथ हैं। ईश्वर उन्हें शक्ति दे।

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार

दादी जानकी ने पूरी दुनिया को अध्यात्म का संदेश दिया और विश्व शांति की राह दिखाई। वे अंतिम समय तक समाज की सेवा करती रहीं। उनका पूरा जीवन समाज के लिए समर्पित रहा।

- सुश्री अनुसूईया उइके, राज्यपाल, छत्तीसगढ़

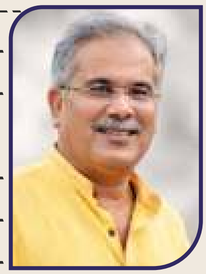

ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी के निधन का समाचार दुखद है। दादी जानकी ने ब्रह्माकुमारी संस्थान के माध्यम से पूरे समाज को अध्यात्म के रास्ते पर आगे बढ़ाने में अतुलनीय योगदान दिया है। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे।

- भूपेश बघेल, मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

ब्रह्माकुमारीज सेवा संस्थान की प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी के निधन का समाचार बहुत ही दुखद है। दादीजी ने अपना संपूर्ण जीवन मानवता की सेवा में अर्पण कर दिया। सदैव समाज को सकारात्मक दिशा दी। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व हमें नि:स्वार्थ भाव से समाजसेवा की प्रेरणा देता है। मैं प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर पुण्य आत्मा को शांति प्रदान करें। ऊं शांति

- जगतप्रकाश नड्डा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा

अचल प्रतिबद्धता के साथ जनसेवा करते हुए ब्रह्माकुमारी की प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी जी ने करोड़ों जन को अपने व्यक्तित्व-कृतित्व से प्रेरित किया है। उनके देवलोकगमन की सूचना भाव विह्वल करने वाली है। प्रभु श्रीराम से प्रार्थना है कि वे उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

- योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

राजयोगिनी दादी जानकी जी के निधन से बहुत दुखी हूँ। दुख की इस घड़ी में मेरे विचार और प्रार्थनाएँ ब्रह्माकुमारियों के साथ हैं।

विजय रुपाणी, मुख्यमंत्री, गुजरात

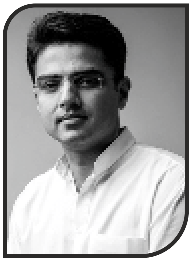

ब्रह्माकुमारीज संस्था की प्रमुख दादी जानकी के देहांत का समाचार सुनकर अत्यंत दुख हुआ। उनका निधन आध्यात्मिक जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। परमपिता परमेश्वर दिवंगत आत्मा को श्रीचरणों में स्थान प्रदान करें एवं अनुयायियों को यह क्षति सहन करने का संबल प्रदान करें।

- सचिन पायलट, उप-मुख्यमंत्री, राजस्थान

ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका 104 वर्षीय दादी जानकी के निधन के समाचार से बहुत दुख हुआ। मैंने कई साल पहले उनसे मुलाकात की थी। उन्होंने महिला सशक्तिकरण और समाज को संगठित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

शशि थरुर, पूर्व केंद्रीय मंत्री व कांग्रेस नेता

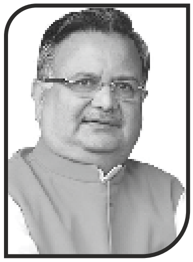

विश्व में आध्यात्मिक प्रेरणा का सबसे विशाल संगठन ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी के देहांत के समाचार से हृदय को गहरा दुख पहुंचा है। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान एवं शोकाकुल अनुयायियों को धैर्य प्रदान करें।

- डॉ. रमन सिंह, पूर्व मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

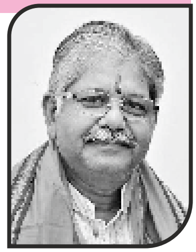

विश्व के सबसे बड़े आध्यात्मिक संगठन ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका एवं महिला शक्ति की प्रेरणास्रोत राजयोगिनी दादी जानकी के निधन से हम दुखी हैं। आध्यात्म के माध्यम से समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना व लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन के लिए उनका समूचा जीवन समर्पित रहा है। मैं उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

- धर्मलाल कौशिक, नेता प्रतिपक्ष, छत्तीसगढ़

ब्रह्माकुमारीज संस्था की प्रमुख दादी जानकी को अहिंसा विश्व भारती की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि। दादी सही मायनों में सच्ची भारत रत्न थीं।

- आचार्य लोकेश मुनि

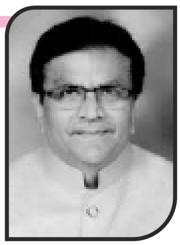

इस महान आत्मा को जिसने नारी शक्ति प्रधान आध्यात्मिक संगठन का सफल नेतृत्व किया, विनम्र श्रद्धांजलि।

- ओमप्रकाश धनकर, बीजेपी नेता, हरियाणा

ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी के निधन का दुखद समाचार मिला। उनके मानवता व मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए किए गए कार्य सदैव अविस्मरणीय रहेंगे। मैं उनके निधन पर अपनी शोक संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। ईश्वर उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान प्रदान करे व उनके पीछे उनके शुभचिंतकों व प्रशंसकों को यह दुख सहने की शक्ति प्रदान करे। **- कमल नाथ, पूर्व मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश**

राजयोगिनी दादी जानकी जी

पूर्व मुख्य प्रशासिका ब्रह्माकुमारीज

जीवन-परिचय तथा प्राप्त सम्मान-अवार्ड

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के कार्यों का संचालन करने एवं इस संस्थान का विकास करने में राजयोगिनी दादी जानकी जी का जीवन अनूठा रहा है। आजादी के तुरन्त बाद, जाति प्रथा सहित अनेक सामाजिक परम्पराओं के बंधनों को तोड़ते हुए दादी जानकी जी एक सक्रिय महिला आध्यात्मिक नेत्री के रूप में उभरीं। दादीजी ने सम्पूर्ण भारतवर्ष का भ्रमण किया और महिलाओं को आत्म-संयम का पाठ पढ़ाया तथा उन्हें सिखाया कि वे किस प्रकार अपने समुदाय को नेतृत्व प्रदान कर सकती हैं।

बचपन से ही दादी जानकी जी को इस बात की चिंता बनी रहती थी कि वे किस प्रकार दूसरों के जीवन को सुखी बना सकेंगी। बाल्यकाल में आप पिताजी की घोड़ेगाड़ी में बैठ घूम-घूमकर शाकाहार का प्रचार किया करती थी और बुजुर्ग तथा बीमार लोगों की सेवा के साथ-साथ उनका आत्म-सम्मान बढ़ाया करती थी। आपकी प्रारंभिक शिक्षा अनेक भारतीय शास्त्रों के अध्ययन से ओत-प्रोत रहीं और उन शास्त्रों की अनेक बातें दादीजी को पहले से ही कंठस्थ थीं। परमात्मा और सत्य ज्ञान की खोज में आपने अनेक तीर्थ-यात्राएँ की।

एक महान आध्यात्मिक नेता के रूप में विश्व-विख्यात दादी जी के जीवन का केंद्रबिंदु था ईश्वरीय कार्य और ईश्वरीय इच्छा के प्रति दिल और दिमाग से पूर्ण समर्पण। आप मानती थी कि परमात्मा पवित्र प्रेम और दिव्य विवेक के स्रोत हैं और इन्हीं दोनों गुणों को आपने अपने जीवन का आधार बनाया। इस आध्यात्मिक शक्ति ने आपको विश्व भर की आत्माओं के लिए प्रकाश-स्तंभ बना दिया।

सन् 1937 में, 21 वर्ष की आयु में प्रजापिता ब्रह्मा बाबा द्वारा स्थापित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आपने अपने को समर्पित कर दिया। इसी काल में महिलाओं पर थोपी गई बंदिशों को तोड़ा गया और स्वतंत्र जीवन जीने की शुरूआत हुई। यद्यपि इस नई मुक्ति से खुशी तो बहुत मिली लेकिन कई बार उलझाने वाली परिस्थितियाँ भी निर्मित होती थी। दादी जी को इस मार्गदर्शक समूह में नर्स की सेवा प्राप्त हुई थी इसलिए उनको अपने कार्य में कुशलता और सहानुभूति के साथ-साथ शारीरिक मेहनत भी करनी पड़ती थी। दादी जी को जीवन में लगातार बीमारियों का सामना भी करना पड़ा। इन बीमारियों ने परीक्षा भी ली और शारीरिक अक्षमता को जीतने की योग्यता भी प्रदान की।

सन् 1974 में दादी जी ब्रिटेन पहुंची जहाँ उन्हें ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के एक केन्द्र की स्थापना करने एवं उसका संचालन करने का जिम्मा सौंपा गया था। उन्हें पश्चिमी जगत के लोगों को आत्म-संयम एवं आध्यात्मिकता को अपनाने के लिए प्रशिक्षित करना था। उनकी विद्वता के कारण अनेक धर्मों एवं मतों की अनेक महिलाओं को जरूरत के समय अपने अंदर साहस को जगाने तथा अपनी मदद स्वयं करने की दृष्टि प्राप्त हुई। सर्व के लिए समदृष्टि रखने के कारण दादीजी ने लाखों लोगों को इस बात के लिए प्रेरित किया कि वे आपसी भेदभाव को भुलाकर मिलजुल कर सौहार्दपूर्वक अपना जीवन यापन करें।

उनकी प्रेरणा से आज ब्रिटेन में अनेक ईश्वरीय केन्द्र स्थापित किये जा चुके हैं तथा दुनिया के करीब 140 देशों में भी ईश्वरीय केन्द्रों की स्थापना हो चुकी है। संस्थान के विद्यार्थी एवं शिक्षक-शिक्षिकाएं अस्पतालों, विद्यालयों, जेलों, शरणार्थी शिविरों, बेसहारा बच्चों, वेश्याओं एवं व्याधिग्रस्त लोगों के आवासों में जाकर उनकी सेवा करते हैं तथा व्यसनियों को भी व्यसन मुक्त करने की कोशिश करते हैं। अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों, मूल्यों एवं योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए जमीनी स्तर पर दादी ने शुरूआत की, परिणामस्वरूप अनेक लोगों एवं समुदायों के लोगों का जीवन स्तर विकसति हुआ तथा पर्यावरण की स्थिति में भी सुधार लाया गया।

दादी जी को प्राप्त सम्मान-अवार्ड

दादी जानकी जी आध्यात्मिक एवं धार्मिक लोगों के एक संगठन 'कीपर्स ऑफ विजडम' की एक मान्य सदस्या थी। रियो में संपन्न धरती सम्मेलन एवं इस्ताम्बुल में सम्पन्न हैबीटैट-2 में विजडम कीपर्स द्वारा सम्मेलन का आयोजन किया गया था।

उनके सम्मान में 1977 में लंदन में जानकी फाऊंडेशन फार ग्लोबल हेल्थकेयर की स्थापना एवं सेवाओं की शुरुआत की गयी थी। अपने अनेक वर्षों की मानवीय सेवा के दौरान दादीजी का हमेशा यह प्रयत्न रहा कि मनुष्यों के सर्वांगीण विकास का प्रयत्न किया जाना चाहिए जिससे कि उनका भावनात्मक, आध्यात्मिक, रचनात्मक एवं सामाजिक विकास हो सके। दादीजी ने ऐसा ही किया।

प्रकाशित पुस्तकें

- विंग्स ऑफ सोल, 1999 में हेल्थ कम्यूनिकेशन्स के द्वारा
- पर्ल्स ऑफ विजडम, 1999 में हेल्थ कम्यूनिकेशन्स के द्वारा
- कम्पेनियन ऑफ गॉड, 1999 में बी. के. आई एस द्वारा
- इनसाइड आऊट, 2003 में बी. के आई एस द्वारा

दादी जानकी द्वारा आमजन के लिए की गयी सेवाएं

2007

★ दादी प्रकाशमणि जी के निधन के बाद 27 अगस्त, 2007 को दादी जानकी जी को ब्रह्माकुमारीज संस्थान की मुख्य प्रशासिका का कार्यभार सौंपा गया।

★ सेंटर ऑफ एक्सेलेंस तथा वीमेंस हेल्थ, कैलीफोर्निया, सेनफ्रांसिस्को में मुख्य वक्ता के तौर पर प्रवचन

★ सेक्रोमेंटो के स्प्रीचुअल लाइफ सेंटर के वरिष्ठ मंत्री माईकेल मोरन के साथ सेक्रेट्स ऑफ टॉंसफार्मेशन पर चर्चा

2006

★ जस्ट ए मिनट के प्रारम्भ के अवसर पर रोबिन गिब्स द्वारा रचित कविता मदर ऑफ लव, दादी जानकी को समर्पित की गयी।

★ दादी जानकी एवं एंड्रयू पावेल ने आक्सफोर्ड टाऊन हॉल में, हम जानते हैं कि ''कैसे जीवन बिताया जाए और कैसे मृत्यु का वरण किया जाए'' इस विषय पर चर्चा की।

2005

★ लंदन में आयोजित एक त्रिदिवसीय सम्मेलन - बी द चेंज के दूसरे दिन 'मनुष्य एवं उनका ग्रह' विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में विचार प्रकट किए।

★ कैंब्रिज अमेरिका में दादीजी को 'करेज ऑफ कंशेन्स' अवार्ड प्रदान किया गया।

★ जून 2005 में मियामी में संपन्न What the Bleep do we know? नामक कार्यक्रम में दादी ने मुख्य वक्ता के रूप में प्रवचन प्रस्तुत

किया।

- जून 2005 में दादी जी को Kashi Humanatarian Award प्रदान किया गया।
- दिल्ली में सम्पन्न द्वितीय International Congress of Mothers, मास्को की एक संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दादी ने मुख्य वक्ता के रूप में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

2003

- -यरूशलम में सम्पन्न World Congress of Religious Leaders के सम्मेलन में दिसम्बर में दादी ने भाग लिया।
- जून 12-14 के बीच ओस्लो में Global Peace Initiative of Women Religious & Spiritual Leaders द्वारा आयोजित कार्यक्रम में दादीजी ने मुख्य वक्ता के तौर पर अपने विचार रखे।
- लंदन के ओलंपिया कांफ्रेंस सेंटर द्वारा आयोजित Mind, Body and Soul Exhibition में Quiet Room का उद्घाटन योगशक्ति राजयोगिनी दादी जानकी जी ने किया।
- सेलडोनियन थियेटर ऑक्सफोर्ड में Through the Brain Barrier नामक विषय पर दादी जानकी, प्रो. कोलिन ब्लैकमोर एवं डॉ. पीटर फेनविक के बीच डायलॉग चला।

2002

- बर्मिंघम में आयोजित 'Respect, Its All About Time' नामक कार्यक्रम में दादी जी प्रिंस ऑफ वेल्स सहित अनेक आध्यात्मिक नेताओं के साथ शामिल हुईं।
- मैड्रिड में द्वितीय " UN World Summit on Sustainable Development" के लिए एक प्रतिनिधि मंडल का दादीजी ने नेतृत्व किया।
- दादीजी ने जेनेवा में आयोजित "The Global Peace Initiative of Women Religious & Spiritual Leaders" नामक सम्मेलन में भाग लिया।

2000

- Wings of Soul नामक दादीजी की दूसरी पुस्तक का विमोचन संम्पन्न हुआ।
- Pearls of wisdom नामक दादी जी की तीसरी पुस्तक का भी विमोचन हुआ।

1999

- जेनेवा में आयोजित UN World Summit on Social Development के लिए दादीजी ने एक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया।
- स्वीटजरलैंड में आयोजित कार्यक्रम The Human Aspects of Social Integration में दादीजी ने अपनी प्रस्तुति दी।
- न्यूयार्क के यू एन जनरल एसेम्बली हॉल में Millenium World Peace Summit of Religious and Spiritual Leaders नामक एक कार्यक्रम में दादीजी ने ब्रह्माकुमारीज प्रतिनिधि मंडल को अपना नेतृत्व दिया और अपना वक्तव्य भी प्रस्तुत किया।
- State of World Forum न्यूयार्क में अपनी प्रस्तुति दी।

1998

- हाउस ऑफ लार्डस, लंदन में यूनाईटेड नेशंस पीस मैसेंजर कार्यक्रम एवं ग्लोबल को-आपरेशन फार ए बेटर वर्ल्ड का पहली बार आगाज किया गया। दुनिया के 129 देशों में, गलियों के बेसहारा बच्चों से लेकर देश के प्रधानमंत्रियों तक ने स्व सेवा तथा सामुदायिक कार्यक्रमों की शुरुआत की अथवा इसमें शिरकत की।
- संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित अंतर्राष्ट्रीय शांति वर्ष के अवसर पर 'मिलियन मिनट्स ऑफ पीस अपील' नामक एक महत्तम धनोपार्जन रहित कार्यक्रम दुनिया के 88 देशों में आयोजित किया गया। इस

कार्यक्रम को संयुक्त राष्ट्र ने 7 शांतिदूत पुरस्कार प्रदान किए।

1997

★ ग्लोबल अस्पताल एवं शोध संस्थान, आबू पर्वत के कार्यों के सफल संचालन के लिए दादीजी ने जानकी फाउंडेशन फार ग्लोबल हेल्थ केयर नामक संस्थान को अपना नाम प्रदान किया। इससे सम्पूर्ण स्वास्थ्य एवं हेल्थ केयर के क्षेत्र में आध्यात्मिकता के योगदान के प्रति लोगों के नजरिये में बदलाव आया।

1996

★ दादी जानकी की अंग्रेजी पुस्तक 'कम्पेनियन ऑफ गॉड' का विमोचन किया गया।

★ इस्ताम्बुल, टर्की में आयोजित संयुक्त राष्ट्र के सेटलमेण्ट - 2 नामक सम्मेलन में दादीजी ने एक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया।

★ उक्त सम्मेलन में विश्व की विभिन्न सरकारों को दादीजी ने मानवोन्मुख विकास, मनुष्यों की भूमिका एवं आध्यात्मिक मूल्यों के संदर्भ में उनके कार्यकलाप क्या हों, इसकी जानकारी दी।

★ दुनिया के 60 से भी अधिक देशों के बच्चों को सिखलाई जा रही लिविंग वैल्यूज तथा एजुकेशनल इनिशियेटीव का शुभारम्भ किया। यूनीसेफ से सम्बद्ध शिक्षाविदों के साथ मिलकर दादीजी ने इसका प्रारंभ किया।

★ State of The World Forum, San Francisco में एक वक्ता के रूप में भाग लिया।

★ सिंगापुर में 5000 लोगों की उपस्थिति में अपनी पुस्तक 'कम्पेनियन ऑफ गॉड' का चायनीज भाषा में विमोचन किये जाने के अवसर पर दादीजी उपस्थित थीं।

★ यूनीसेफ की 50वीं वर्षगाँठ के अवसर पर 'यंग वोमेन ऑफ विजडम' नामक कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

1995

★ बीजिंग, चाइना में आयोजित UN 4th World Conference on women के लिए दादीजी ने एक प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व किया।

★ - राजनीति, विज्ञान, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में मूल्यों के विकास का लक्ष्य रखते हुए Sharing Our Values For A Better World नामक एक वैश्विक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसका प्रारम्भ दादीजी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ।

1993

★ Inter-Religious Understanding And Co-operation नामक यू के में आयोजित एक कार्यक्रम की मेजवानी दादीजी ने की। इस कार्यक्रम में विभिन्न मतों के 600 से भी अधिक लोगों ने हिस्सा लिया।

★ दादीजी 'वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ फेथ' की उपसभापति चुनी गयी।

★ ऑक्सफोर्ड के नजदीक ग्लोबल रिट्रीट सेन्टर की स्थापना के निमित्त बनी।

1991

★ दादीजी के प्रयत्नों से लंदन में ग्लोबल को-आपरेशन हाउस का शुभारम्भ हुआ जिसके द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों को एक छत के नीचे लाने का कार्य सम्पन्न हो रहा है तथा शैक्षणिक कार्यक्रमों के द्वारा लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा रहा है।

1983

★ दादीजी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका बनीं। ■■■

बाबा से समीप सम्बन्ध जुड़वाने वाली
दादी जानकी

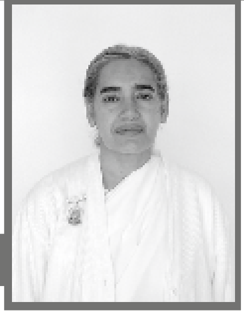

ब्रह्माकुमारी जयन्ती, लंदन

दादी जानकी जी से मेरी पहली मुलाकात अप्रैल, 1957 में पूना में हुई। तब मैं सात साल की थी। पूना में बहुत छोटा-सा और बहुत ही साधारण किराये का सेण्टर था। हम उस समय पूना में रहते थे परिवार सहित। पिताजी उस समय अफ्रीका में थे। वहाँ हम बच्चों की शिक्षा की कोई अधिक सुव्यवस्था न होने के कारण हम पूना में ही रह रहे थे।

उन दिनों भी सेण्टर पर बच्चों का क्लास 10:30 बजे शुरू होता था। हमारी गर्मी की छुट्टियाँ चल रही थीं। क्लास में आने वाले बच्चों को कुछ खेल कराये जाते थे और अच्छी-अच्छी बातें सुनाई जाती थीं। कुछ अन्य बहनें थीं जो ये सेवा करती थीं। क्लास के अन्त में दादी जानकी मिलती थीं। कभी-कभी क्लास करते-करते 12 बज जाते थे तब दादी को संकल्प आता था कि बच्चों को घर पहुँचने में भी समय लगेगा इसलिए सेंटर पर जाकर कुछ न कुछ बनाकर ले आती थीं। क्लास सेण्टर के बाजू वाले घर के बगीचे में चलता था। उस घर की माता ज्ञान सीखने आती थी। दादी के पास भण्डारे में उन दिनों बहुत कुछ नहीं होता था, वो बच्चों को जो कुछ खिलाती थी, उनके अपने ही भोजन का हिस्सा होता था।

बड़ा दिल

दादी का शुरू से बड़ा दिल रहा। आप सभी ने भी देखा है कि कोई भी मिलने आता था तो कहती थीं कि टोली भी, वरदान भी, किताब भी, फल भी सब कुछ लो। कोई न कोई सौगात भी देना चाहती थीं, चाहे छोटी ही क्यों न हो। ऐसा नहीं कि जब भण्डारा भरपूर है तब दादी का विशाल दिल बना, शुरू से ही विशाल दिल वाली रहीं। अपने लिए नहीं सोचना, औरों के लिए सोचना। इसके बाद हम पूना से लंदन चले गये। वहाँ बाबा की मुरली के साथ-साथ दादी के क्लास भी आते रहे। हर सोमवार के दिन मुरली का पैकेट आता था। दादी का पत्र भी नियम से आता था। पहले तो दादी ही सारा लिखती थीं, बाद में इन्द्रा बहन ज्ञान में आईं तो वह लिखने लगीं। उसकी लिखाई भी बहुत अच्छी थी। सिन्धी में लिखती थीं। पत्र का तीन हिस्सा दादी की क्लास होती थी। फिर दादी याद-प्यार लिखती थीं। तब हम हर वर्ष अगस्त में भारत आते थे क्योंकि वहाँ छुट्टियाँ जुलाई-अगस्त में होती थीं और दादी के पास हम राखी बंधवाने आते थे। दादी बहुत प्यार से मिलती थीं। दादी को यह नहीं लगता था कि ये बच्चे हैं, क्या समझेंगे? नहीं। दादी की प्यार भरी पालना उस समय भी मिलती रही।

बाबा से प्रथम बार मैं राजौरी गार्डन, दिल्ली में मिली थी, आबू में प्रथम बार 1966 में आई थी। दादी उस समय अहमदाबाद में थी। बाबा ने उनको सेवार्थ वहाँ भेजा था। मुम्बई से हम अहमदाबाद ही आये और देखा कि दादी की तबियत ठीक नहीं थी। दादी के शरीर का बायाँ हिस्सा पैरालाइज्ड था। फिर भी बाबा की आज्ञानुसार दादी हमारे साथ आबू में आईं। हम घर के 4-5 सदस्य थे। आबू में मानसून होने के कारण केवल 20 लोग ही निवास कर रहे थे। उनमें भी कुछ बूढ़ी मातायें थीं। दादी ने बाबा के साथ हमारा समीप सम्बन्ध जोड़ने में बहुत सुन्दर पार्ट बजाया। रजनी बहन (लौकिक माताजी) का तो पहले

ही बाबा के साथ समीप सम्बन्ध था ही। दादी हमारा बहुत ध्यान रखती थीं। उनकी भावना सदा रहती थी कि हम बाबा के नजदीक आयें।

दादी ने परखी मेरी नब्ज

इसके बाद सन् 1968 में जब मैं भारत आई तो मुझे संकल्प चला कि मैं कुछ ज्ञान सुनूं। दादियों को और दैवी परिवार को तो मैं जानती ही थी लेकिन ज्ञान क्या है, इसे मैं बहुत गहराई से नहीं जानती थी। पूना का सेण्टर हमारे घर से ज्यादा दूर नहीं था। मैं सेण्टर पर दादी के पास चली गई, 11 बजे का समय था। एक योगी को इस बात का पता होता है कि आई हुई आत्मा को किस बात की जरूरत है। दादी ने मुझे पूछा कि तुमको कुछ कहना है या मैं कुछ सुनाऊँ? मैंने कहा, दादी, आप सुनाओ। तब दादी ने मेरी नब्ज देखकर एक बात सुनाई। उस समय भी लन्दन या भारत में सब जगह ही कलियुगी वातावरण था। आज तो अति आ गई है। उस समय ऐसी अति नहीं थी फिर भी दादी ने कहा, आज के समय समाज, शिक्षा, मित्र, मीडिया आदि का बुद्धि पर जो प्रभाव है इस कारण बुद्धि स्पष्टता से यह सोच नहीं सकती कि मुझे किस रास्ते पर चलना है। उस समय मैं भी बुद्धि की इसी अस्पष्ट स्थिति में थी। पश्चिम की संस्कृति और भारत की संस्कृति बिल्कुल अलग-अलग। लौकिक माताजी (रजनी बहन) ईश्वरीय ज्ञान में चल रहीं थीं तो वो मार्ग बिल्कुल अलग। पश्चिम में भी इतनी छूट कि कुछ भी करो, किसी नियम-मर्यादा का कोई बन्धन नहीं। वहाँ यह सब 1965 के बाद ही शुरू हुआ। तो बहुत सारे रास्ते थे मेरे सामने कि मुझे किस पर चलना है। दादी जी ने जब यह बात कही तो मैंने पूछा कि हम क्या करें जिससे ये सारे प्रभाव बुद्धि से हट जायें। दादी ने कहा, राजयोग सीखो। तब दादी के साथ ब्रह्माकुमारी सुन्दरी बहन रहती थीं। वे बाहर सेवार्थ गई हुई थीं। एक बजे जब वे लौटीं तब दादी ने उन्हें कहा कि आप जयन्ती बहन को कोर्स कराओ। दादी ने मुझे कहा कि आप आज सायंकाल से ही शुरू करो। दादी को यह भी पता था कि मन कभी भी बदल सकता है।

सहयोग का बीज डालने का संस्कार

इस प्रकार, अप्रैल से मई तक मुझे दादी जी की खूब पालना मिली। मई माह में महाबलेश्वर में प्रदर्शनी लगाई गई थी। उसमें दादी प्रकाशमणि जी आई थीं। वहाँ पर उनकी भी सप्ताह भर पालना मिली। मुम्बई, पूना के हम करीब 30-40 लोग सेवा पर थे। तब तक मैं सुबह-शाम क्लास में आने लगी थी। दादी जानकी जी ने मुझे कहा कि आप भी प्रदर्शनी में जाओ, आनन्द आयेगा और सीखने को भी मिलेगा। दादी जानकी ने यह भी कहा कि पूना-मुम्बई, भाई-बहन हैं इसलिए बड़े-बड़े डिब्बे नमकीन, मीठी टोलियों (प्रसाद) के भरकर हमारे साथ दिए। दादी ने कहा कि मुम्बई वाले तो कर ही रहे हैं परन्तु पूना को भी सहयोग देना है। इस प्रकार देखा कि किसी भी सेवा में बड़े दिल से सहयोग का बीज डालने का संस्कार दादी जी में था।

महाबलेश्वर में बोर्डिंग स्कूल लिया हुआ था। इतने दैवी भाई-बहनों की पालना में प्रसाद की भी जरूरत थी। तब मैंने पहली बार देखा और जाना कि ईश्वरीय सेवा क्या होती है! प्रदर्शनी से वापिस लौटकर मैंने दादी से कहा कि मुझे समर्पित होना है, सेन्टर पर रहना है। दादी ने कहा, बाबा से पूछो। तब मैंने बाबा को इंग्लिश में पत्र लिखा। बाबा इंग्लिश पढ़ते थे। अगले ही दिन बाबा का उत्तर टेलीग्राम के रूप में आया। बाबा कभी रुकते नहीं थे किसी भी बात के लिए। उनका मानना था, जो करना है अभी करो। इसलिए बाबा ने तार भेजा, पत्र नहीं। अगली सुबह क्लास के बाद दादी ने मुझे वो तार दिखाया। बाबा ने लिखा था, जनक आ रही है, तुम उसके साथ आ जाना। ऐसी बातें पत्र में निर्णित नहीं की जातीं, रूबरू आके बात करना।

ईश्वरीय सेवा पर नियुक्ति

जून 1968 में, मैं दादी के साथ बाबा के पास मधुबन आई। उस समय भी दादी ने बहुत अवसर प्रदान किये जिनसे मैं बाबा के करीब आ सकी। बाबा ने कहा, हाँ बच्ची, बाबा पहले से ही जानते थे कि आपका जीवन ऐसा ही (समर्पित) होगा। उस मुलाकात में, मैं और रजनी बहन बाबा के साथ, बाबा की झोपड़ी में बैठे थे। दादी को जब बताया तो दादी ने कहा, मैं भी जानती ही थी। इसके बाद अक्टूबर माह में दीदी मनमोहिनी जी के साथ मुझे टूर पर भेजा और दीदी को कहा कि इसको कहीं भी ईश्वरीय सेवा पर नियुक्त करो। उस समय बाबा ने मुझे दो बातें कहीं। पहली तो यह कि आप रजनी बहन को पत्र लिखती रहना। दूसरी बात यह कि दादी जानकी को भी अपना हाल-चाल लिखती रहना। मैंने कहा, जी बाबा। मैं थी आगरा में, दादी थीं पूना में परन्तु फिर भी पत्र-व्यवहार और बात होती रहती थी।

दादी की धारणा की ट्रेनिंग बहुत शक्तिशाली थी

प्यारे बाबा ने 1969 में दैहिक कलेवर का त्याग किया। उसी वर्ष मई माह में, मैं मधुवन आई तब टीचर ट्रेनिंग की नियमित टीचर दादी जानकी जी थीं। साकार में ही प्यारे बाबा ने जून, 1968 में दादी जानकी को कह दिया था, मैं आपको यहाँ मधुवन में बुलाता रहूँगा, आप टीचर्स को ट्रेनिंग देती रहेंगी। ट्रेनिंग सेण्टर अभी बना नहीं था, वहाँ बगीचा था। तब इन्द्रप्रस्थ (ट्रेनिंग सेण्टर में दादी का कमरा) भी नहीं था परन्तु बाबा ने दादी को कहा था कि यहाँ पर मैं तुम्हारे लिए कमरा बनाऊँगा। दादी की जो धारणा की ट्रेनिंग थी वो बहुत शक्तिशाली थी। दादी जानकी ने मुझे बार-बार कहा, तुमको लन्दन जाना है पर मैं जाना नहीं चाहती थी। एक तो वहाँ कोई सेण्टर नहीं था, दूसरा यह कि वहाँ मेरी बहुत मित्र थीं। मुझे डर था कि वे मुझे खींच न लें। फिर बाबा तक बात पहुँची। बाबा ने कहा, तुम्हें लन्दन जाना है। वहाँ भी दादी जी की पालना मिलती रही।

बाबा ने दादी को बनाया चांसलर

सन् 1971 में जगदीश भाई ने दीदी मनमोहिनी से कहा कि हमें विदेश सेवा के बारे में सोचना चाहिए। तब तक बाबा को अव्यक्त हुए दो वर्ष हो चुके थे। दीदी ने कहा, विदेश की बातें दादी जानकी ही जानती हैं, मैं नहीं जानती हूँ, दादी जानकी के स्टूडेण्ट ही पालना लेकर विदेश वाले बन गये हैं, उसके पास जाओ। उन दिनों योग कॉन्फ्रेंस के लिए रमेश भाई जी को अमेरिका से निमंत्रण मिला था। उनके कुछ सम्बन्धी वहाँ थे। दादी प्रकाशमणि ने रमेश भाई से पूछा कि आप सीधे अमेरिका जाना चाहते हैं या लन्दन में रुकना चाहते हैं? उन्होंने कहा कि रुककर जायें तो अच्छा है। तब दादी ने हमको पत्र लिखा कि विदेश की सेवार्थ यह डेलीगेशन (रमेश भाई, रोजी बहन, जगदीश भाई, शील दादी, डॉ. निर्मला) आ रहा है। आप उनसे कुछ सेवा लेना। तब मेरे पिताजी ज्ञान में नहीं थे परन्तु सहयोगी थे और उनके मन में दादीजी के प्रति बहुत रिगार्ड था। पिताजी ने प्यार से कहा, पाँच लोग एक मास के लिए आ रहे हैं, कोई हर्जा नहीं। मैंने तो सोचा था कि इस डेलीगेशन में बाबा, दादी जानकी को भेजेंगे परन्तु बाबा ने उन को कहा था कि तुम चांसलर बनकर औरों को चांस देने वाली हो।

इसके बाद लन्दन में सेण्टर बना। पहले डॉ. निर्मला बहन, बाद में दादी रतनमोहिनी लन्दन में आए। इसके बाद मोहिनी बहन लन्दन आईं, उन्हें कनाडा का निमंत्रण मिला था, इन्द्र भाई के सम्बन्धियों की ओर से, जो वहाँ रहते थे। मोहिनी बहन ने देखा कि लन्दन का सेण्टर बहुत छोटा है और थोड़े से स्टूडेण्ट हैं तो उन्होंने दादियों को पत्र लिखा कि तीन साल होने को आये विदेश सेवा को शुरू हुए परन्तु

लन्दन में मुझे कुछ नज़र नहीं आ रहा। आप दोनों दादियाँ (बड़ी दादी प्रकाशमणि जी और दीदी मनमोहिनी जी) शायद व्यस्त हैं परन्तु दादी जानकी का यहाँ कनेक्शन जबरदस्त है। आप बाबा से पूछो कि दादी जानकी यदि यहाँ आयें तो कुछ फाइनल हो कि आगे सेवा किस तरह से करनी है, या तो हम विदेश की सेवा को भूल जायें क्योंकि कुछ रिजल्ट नज़र नहीं आ रहा है।

दादी जानकी को बाबा और दादियों ने विदेश भेजा

मैं तब भारत में आ गई थी। दिल्ली और मुम्बई में मेलों का आयोजन हुआ था। मैं जगदीश भाई के साथ एक पुस्तक बनाने के लिए कमला नगर, दिल्ली में रह रही थी। जगदीश भाई विचार देते थे और उनके साथ गहरी रूहरिहान चलती थी। फिर 'इलस्ट्रेशन ऑन राजयोगा' के चित्र बने और इन चित्रों की बुक भी बनी (बुक साहित्य काउण्टर पर उपलब्ध है)। इसी बीच दादी जानकी को बाबा और दादियों ने कहा कि तुमको विदेश जाना है। तभी मधुवन से जगदीश भाई को फोन आया कि जयन्ती बहन को भी दादी जानकी के साथ विदेश जाना है। फिर मैं और जगदीश भाई मधुवन पहुँचे। बाबा के साथ सभी निमित्त वरिष्ठों की मीटिंग हुई। बाबा ने दादी जानकी को विदेश सेवा की बहुत क्लीयर पिक्चर बताई। दादी ने कहा, मैं कुछ नहीं जानती हूँ। बाबा ने कहा, जरूरत नहीं है जानने की, उनको अनुभूति चाहिए, बोलने की ज्यादा आवश्यकता नहीं होगी। दादी ने कहा, मुझे ऐसा (मधुवन जैसा) बाबा का कमरा कहाँ मिलेगा? बाबा ने कहा, तुमको ऐसा ही कमरा मिलेगा वहाँ। फिर दादी प्रकाशमणि ने बाबा के कमरे का ट्रांसलाइट चित्र, जो बाबा के अव्यक्त होने पर बना था, हमको दिया। मधुवन में दूसरा आ गया था। उसी चित्र से बाबा का कमरा वहाँ बना। फिर तो दादी, भारत और विदेश का चक्कर लगाती रहीं। एक बार तो दादी ने एक वर्ष में तीन बार भारत और विदेश आना-जाना किया, कोई विशेष कार्य था। दादी को सफर करने में कोई संकोच नहीं होता था। कहती थीं, मैं यहाँ बैठी हूँ, गाड़ी या प्लेन में बैठी हूँ, कोई फर्क नहीं पड़ता। दादी ने विदेश में सभी को मित्र भाव से आकर्षित किया, कहती थी, मुझे दादी मत समझो, मैं आपकी फ्रेण्ड हूँ। अपने को हल्का रखकर बहुत सादगी से लोगों के दिलों को जीता। केन, चार्ली आदि ने दादी से ट्रेनिंग लेकर ही अपने-अपने स्थानों पर सेण्टर खोले।

दादी का लन्दन में प्रथम कदम

जब दादी जानकी लन्दन पहुँचीं तब भारत से बाहर दो सेवाकेन्द्र थे, एक लन्दन में, दूसरा हाँगकाँग में । लन्दन की आमदनी हर माह की 120 पाउण्ड थी। बाबा का सेण्टर किराए का था, बहुत छोटा-सा और कुल 12 विद्यार्थी थे, जिन्होंने भारत में ज्ञान लिया था। लेस्टर में दादी रतनमोहिनी ने शुरूआत की थी। वहाँ एक छोटे-से घर में 8-10 स्टूडेण्ट थे। वह स्थान गीता पाठशाला के रूप में चल रहा था।

दादी जी जब लन्दन पहुँची तब एक प्रसिद्ध स्थान पर प्रदर्शनी होने वाली थी। उसी के लिए जगदीश भाई ने 'इलस्ट्रेशन ऑन राजयोगा' के नाम से चित्र बनाये थे। प्रदर्शनी के निमित्त वहाँ रमेश भाई, उषा बहन, डॉ. निर्मला और मोहिनी बहन थे। दादी ने पहुँचते ही पूछा, सवेरे का क्लास कितने बजे होता है? तब डॉ. निर्मला बहन वहाँ निमित्त थीं, उसने कहा, दादी, जितने बजे भी आप कहो, सुबह 7 बजे भी हो सकता है, 8 बजे भी हो सकता है। दादी ने कहा, नहीं! मुझे बताओ, क्लास का समय क्या है? डॉ. निर्मला हँसकर कहती हैं, क्लास में हम सभी ही तो होंगे। जो भी समय आप बतायेंगे, हम बैठेंगे। दादी ने पूछा, कोई और नहीं आता? तो सब एक-दूसरे को

देखने लगे और बताया कि सवेरे और कोई नहीं आता, हम ही होते हैं। दादी ने कहा, तुम फोन करके योगी आत्माओं (योगयुक्त भाई-बहनों) को बुला लो। डॉ. निर्मला ने तब योग में रुचि रखने वाली आत्माओं को फोन करके सुबह की क्लास का निमंत्रण दिया। एक भाई ने कहा, मैं आऊँगा परन्तु मुझे सुबह 5 बजे जगा देना। अगली सुबह हम सभी घर वाले थे और एक भाई अपने घर से आकर शामिल हुआ। लन्दन में दादी जानकी जी की प्रथम मुरली क्लास की यही रूपरेखा थी। दादी देखती थीं कि डॉ. निर्मला और मोहिनी बहन जरूरी सामान खरीदकर, थैले हाथ में लेकर आती थीं। सेण्टर पर कार तो थी नहीं। कार वाले स्टूडेण्ट भी शाम को आते थे। इसके बाद दादी ने आने वालों की प्यार से पालना करते-करते समझाया कि बाबा के घर की सेवा में कैसे सहयोगी बनना है। थोड़े समय के अन्दर ही दादी ने बहुत कुछ परिवर्तन कर डाला।

दादी ने यह नहीं देखा कि भारत में सब कुछ है और लन्दन में कुछ भी नहीं है बल्कि यही भावना रखी कि जो पालना बाबा ने मुझे दी है, वही मुझे औरों को देनी है। दादी सुनाती भी थीं कि अव्यक्त बाबा ने हमें कहा है कि जो पालना मिली है वह औरों को देनी है। दादी की बुद्धि में यह बात बहुत पक्की थी। लन्दन भेजते समय बाबा ने दादी को यह भी कहा था कि मधुवन का मॉडल वहाँ बनाना है। दादी को यह निर्देश भी पक्का था और इसलिए दादी ने लक्ष्य रखा कि जो भी आएँ वे मधुवन के नियम, मर्यादा, पालना और प्राप्ति का अनुभव करके जायें। करन-करावनहार बाबा ने जो हैण्ड्स दादी से तैयार कराये उन्हीं में से एक ने ऑस्ट्रेलिया की सेवा शुरू की। डेनिस बहन, कनाडा, अमेरिका, जर्मनी गईं। इस प्रकार एक-एक देश में सेवा शुरू होती गई। थोड़े देश सत्तर के दशक में और अस्सी के दशक में बहुत सारे देश सेवा के दायरे में आ गए।

सादी, सरल, खुशी भरी ज़िन्दगी

दादी प्रकाशमणि जब लन्दन में आईं तब हम लोगों ने बहुत प्रयास किया कि बहुत सुन्दर स्थान दादी के लिए मिले। दादी जानकी के मन में था कि जब मैं बाबा को पूना में बुलाती थी तो बढ़िया से बढ़िया स्थान बाबा के लिए लेती थी। दादी के निमित्त कार्यक्रम की तैयारियाँ तो चल रही थीं परन्तु दादी प्रकाशमणि के रहने के लिए बहुत अच्छा स्थान नहीं मिल पाया था। दादी को बताया कि आप आयेंगी तो आपके लिए बहुत साधारण स्थान होगा। दादी ने बहुत प्यार से लिखा कि मैं जगह को देखने थोड़े ही आ रही हूँ। मैं तो सब बाबा के बच्चों को देखने आ रही हूँ। बड़ी दादी और रमेश भाई दोनों आए थे। एक दिन हम कार्यक्रम से लौटे, 9:30-10 बज गए थे। बड़ी दादी ने कहा, देखूँ भोजन में क्या बना है? मैं दादी जानकी को देखूँ और दादी मुझे देखे। तब सुदेश बहन भी वहीं थीं। सुबह की कुछ तैयारी थी नहीं क्योंकि प्रोग्राम में गए थे। तब दादी जानकी ने बड़ी दादी को कहा, दादी, आप जब तक रिफ्रेश हो जाओ, अभी बन जाता है। दादी जानकी खाना बनाने में बहुत होशियार थीं। तुरन्त पनीर की सब्जी बनी, दूसरे चूल्हे पर हमने चपाती बनाई। फिर सबने बाबा के साथ-साथ अपने को भी भोग लगाया। इस प्रकार बहुत ही सादी, सरल, खुशी भरी ज़िन्दगी थी।

दीदी मनमोहिनी, दादी जानकी को हमेशा कहती

थीं, लन्दन में बैठकर तुम क्या कर रही हो? परन्तु विदेशी ब्रह्मावत्स मधुबन आने लगे तो दादियों ने उनसे ज्ञान, योग, धारणा के प्रश्न अच्छे से, गहराई से पूछे। उनके उत्तर सुनकर दादियों को दादी जानकी की सेवा का साक्षात्कार होने लगा। दादी जानकी ने ज्ञान-योग जिज्ञासुओं में कूट-कूट कर भरा था। दादी जी के ज्ञान के मन्थन, बाबा के प्रति प्यार और यज्ञ के प्रति पूर्ण समर्पण ने सभी के अन्दर वैसा ही बीज डाल दिया।

वर्ष 2005 में एक बार हम डरबन (साउथ अफ्रीका) में थे। तब दादी गुलजार का फोन आया कि आपको मधुवन में तुरन्त आना है। मैंने दादी जानकी जी से कहा कि दादी, अभी 'कॉल ऑफ टाइम' कार्यक्रम चल रहा है, क्या बाबा, दो दिन की छुट्टी और देंगे ताकि आप कार्यक्रम पूरा करके ही भारत जायें। दादी जानकी ने कहा कि अब फुलस्टॉप और वे तुरन्त भारत आ गईं।

भारत में दादी प्रकाशमणि की तबियत बहुत नाजुक थी। मैं समझ गई थी कि इसके बाद तो दादी लन्दन निवासी नहीं रहेंगी। तब तक रिट्रीट सेण्टर, ग्लोबल हाउस, डायमण्ड हाउस तथा यू.के. में 44 सेण्टर बन चुके थे और 110 देशों में सेवा हो चुकी थी। इतना सब कार्य करके दादी भारत में आ गईं। विश्वभर से ई-मेल, फोन, व्हाट-ऐप मैसेज आ रहे हैं कि हम दादी के अन्तिम समय पहुँच नहीं सके परन्तु यह भी भगवान की योजना थी। दादी नहीं चाहती थीं कि एक फूल का खर्चा भी उनकी अर्थी के लिए हो। ऐसी विदेही दादी जी को शत-शत नमन! ■■■

दादी जी हमारी

■■■ **ब्रह्माकुमार सन्तोष, शान्तिवन**

प्यारे बाबा की थी वो, प्यारी-सी राजकुमारी,
सबसे अलग, सबसे निराली, दादी जी हमारी,
मैं बाबा की, बाबा मेरा, थी दिल में यही खुमारी,
सबसे अलग, सबसे निराली, दादी जी हमारी।।

एक नज़र जो उनको देखे, वो उनका हो जाता,
उनकी सूरत में वो प्यारे बाबा को ही पाता,
नज़रों से निहाल करना, थी उनकी अदाकारी,
सबसे अलग, सबसे निराली, दादी जी हमारी।।

कौन हूँ मैं, मेरा कौन, गीत यही वो गाती थी,
मेरा बाबा कहते सबको, बाबा याद दिलाती थी,
सादगी पे उनकी शीश झुकाये दुनिया सारी,
सबसे अलग, सबसे निराली, दादी जी हमारी।।

रूहानियत और मधुरता की, दिव्य अलौकिक मूरत थी,
नैनों में था नूर निराला, प्यारी-सी उनकी सूरत थी,
जनक बेटा कहते थे बाबा, थी बाबा की वो दुलारी,
सबसे अलग, सबसे निराली, दादी जी हमारी।।

दिल में और सबकी ज़ुबां पे, नाम आपका हरदम रहेगा,
दूर हमसे गये तो क्या, दिल से प्यार न कम होगा,
सदियों तक आती रहेगी, हम सबको याद तुम्हारी,
सबसे अलग, सबसे निराली, दादी जी हमारी।।

सदा एकाग्र-मन और एकरस स्थिति में रहने वाली

दादी जानकी

■■■ ब्रह्माकुमारी उर्मिला बहन, शान्तिवन

नम्रता, सरलता, स्नेह और शक्ति की मूर्त राजयोगिनी दादी जानकी जी का मुरली का उत्कृष्ट चिंतन उन्हें एक्स्ट्रा एनर्जी देता है और उनके माध्यम से एनर्जी का वह प्रवाह हम सब ब्रह्मावत्सों तक पहुँचता रहता है। जब मैं ईश्वरीय ज्ञान में आई, उन्हीं दिनों दादी जी का एक लेख ज्ञानामृत में छपा था। उसमें दादी ने यूँ तो बाबा द्वारा समय-समय पर प्राप्त अनेक वरदानों का वर्णन किया था परन्तु एक वरदान ने मेरे मन को इतना मोहा कि मैं चलते-फिरते मन ही मन उसे माला की तरह फिराने लगी। जो बाबा ने दादी को दिया था, वह वरदान था, "तुम श्रीमत पर चलती रहो तो मैं भाग्य बनाकर तुम्हारे हाथ में दे दूँगा।" संगठन में रहते, ईश्वरीय सेवा की जिम्मेवारियाँ निभाते यदि कभी कोई बात सामने आती तो यह वरदान बहुत बल देता कि हमें केवल श्रीमत पर चलना है, फिर भाग्य बनाने की जिम्मेवारी स्वयं भाग्यविधाता की है।

जब प्यारे बाबा ने बेहद यज्ञ की जिम्मेवारी दादी जी को सौंपी और उनके सिर पर हाथ रखा तब पूछा था, बच्ची माथा भारी तो नहीं होता? तब दादी जी ने बहुत सुन्दर उत्तर दिया था, (माथा भारी करने की) अक्ल ही नहीं है। दादी जी अपने अनुभव सुनाते भी अक्सर कहती थी कि व्यर्थ सोचने की अक्ल ही नहीं है। इससे बहुत प्रेरणा मिलती है कि ऐसी अक्ल तो सचमुच हमें भी नहीं चाहिए। दादी जी इसीलिए ही सदा एकाग्र-मन और एकरस स्थिति में स्थित रहती थी।

एक बार एक विशेष महिला (V.I.P.) दादी जी के समक्ष थी। दादी जी ने उनको बाबा की मुरली का महत्त्व तो समझाया ही पर शरीर को सजाने आदि में व्यर्थ जाने वाले समय को बचाने की शिक्षा भी इतनी स्पष्ट रीति से दी कि वह सुन-सुन कर मुसकराती रही और हम दादी की स्पष्टवादिता से गद्‌गद् होते रहे।

दादी जी की सादगी, समय की बचत और अनासक्ति ने हर ब्रह्मावत्स के दिल को जीता। कई बार जब प्रकाशन के कारोबार से सम्बन्धित कोई मैटर उनसे पढ़वाना होता था तो दादी जी कह देती थी, साथी बहन को दे दो, गाड़ी में रख लेगी, सफर पर जाते-जाते पढ़ दूँगी और फिर रास्ते से फोन द्वारा सूचना भी मिल जाती कि ओ.के.है, प्रकाशन कर सकते हो। इस प्रकार दादी में अपने तथा दूसरों के समय की बचत करना सिखाया।

एक बार मैं दादी से मिलने गई तो देखा, किसी बहन ने उनके लिए बहुत सुन्दर मुकुट भेजा है। मुलाकात के बाद जब मैं जाने लगी तो दादी ने वो मुकुट उठाकर मुझे दे दिया। मैं दादी जी की दातापन की भावना और अनासक्ति को देख अतीन्द्रिय आनन्द में खो गई, साथ-साथ मैंने यह भी सीखा कि वस्तु चाहे छोटी हो या बड़ी, उसके निस्वार्थ लेन-देन से हम आत्माओं की खुशी में अभिवृद्धि कर सकते हैं। हम देकर अमीर बनते हैं, लेकर नहीं। ■■■

ऐसी थी
दादी हमारी

■■■ ब्रह्माकुमार सूर्य, मधुबन

सत्ताइस मार्च के सवेरे के 2 बजे, जब देवगण चहुँ ओर विचरण कर रहे थे, राजऋषि तपस्या में मग्न थे, प्रकृति सम्पूर्ण शीतल और सतोप्रधान थी, तब एक महान आत्मा ने नश्वर देह छोड़कर परमात्मा की गोद ली। वे थीं महान योगिनी दादी जानकी जी।

लंबे समय का अभ्यास अंतिम क्षणों में मनुष्यात्मा की श्रेष्ठ स्थिति बना देता है। दादी जी कई दिनों से अस्वस्थ थीं परंतु दो दिन पूर्व से पूरी तरह स्वस्थ हो गयी थीं क्योंकि उन्हें योगयुक्त होकर अपने वतन को जाना था। लंबे समय का उनका अभ्यास था, 'मैं कौन और मेरा कौन'? यह सम्पूर्ण सत्य है कि अंत में इसी स्मृति में स्थित होकर उन्होंने देह का त्याग किया। वे सृष्टि की अनमोल रत्न थीं, अष्ट रत्न थीं। पहले से ही वे सबकुछ भूली हुई थीं। संसार से उपराम थीं। अंत में उन्हें एक के सिवाए कुछ भी याद नहीं था। यही है किसी योगी की सर्वश्रेष्ठ गति।

विश्व कल्याण में आजीवन संलग्न

वे कहा करती थीं, 'सफेद कपड़े जेब खाली, हम हैं सारे विश्व के मालिक'। उन्होंने कभी अपने पास पर्स भी नहीं रखा। उनका अपना बैंक अकाउन्ट भी नहीं था। अपना सर्वस्व प्रभु अर्पण करने वाली दादी बेफिक्र बादशाह थीं। उनकी आसक्ति संसार में कहीं भी नहीं थी। उन्हें न पद चाहिए था, न वैभव, न नाम चाहिए था, न मान, न धन चाहिए था, न स्वादिष्ट भोजन। उन्हें चाहिए था केवल विश्व कल्याण का महान कार्य, जिसमें वे आजीवन संलग्न रहीं।

भगवान ने किया प्यार

भगवान से तो सभी प्यार करते हैं पर हम सबने देखा भगवान को उन्हें प्यार करते, उन्हें सम्मान देते। भगवान उनका सच्चा दोस्त बन गया था। इतनी महान और भाग्यवान थीं वो। जीवनभर उन्हें भगवान का साथ मिला। विचारणीय है कि भगवान किसे प्यार करता है। केवल उन्हें नहीं जो उसे प्यार करते हैं लेकिन उन्हें जो सच्चाई का मार्ग अपनाते हैं, जिनमें त्याग भावना व शुभ भावना कूट-कूट कर भरी होती है, जो बहुत पवित्र और निर्मल होते हैं। ऐसी आत्मायें ही संसार के लिए सुखदायी बन जाते हैं।

अशरीरी होने की गहन तपस्या

उनके जीवन के आदिकाल में ही स्वयं निराकार शिव बाबा ने उन्हें 'मस्त फकीर और रमता योगी' नाम दिया था। सचमुच वे योग साधना में मस्त रहती थीं। आत्मचिंतन उनका स्वभाव बन गया था। एकांत उनके लिए वरदान था। ईश्वरीय महावाक्य तो उनकी जान थे। ईश्वरीय महावाक्यों का प्रतिदिन अनेक बार अध्ययन करते हुए उन्होंने अपने चिंतन को बहुत महान बना लिया था। हम जानते हैं कि बिना त्याग के तपस्या फलीभूत नहीं होती। उनके त्याग की कहानियाँ तो अद्भुत हैं। सादगी से भरा उनका जीवन अनेकों के मन को मोह लेता था। उन्होंने जीवन में अशरीरी होने की गहन तपस्या की इसलिये उनकी दृष्टि व बोल में बहुत प्रभाव था।

विदेही राजा

बाबा उन्हें 'जनक बेटा' कहा करते थे। कहते थे, ये मेरा विदेही राजा जनक है। सचमुच वे इस संसार में रहते हुए, सेवाओं से बहुत प्यार रखते हुए, सम्पूर्ण कार्य करते हुए विदेही स्थिति में रहती थीं। यही सत्य है कि उन्होंने सारे संसार में विचरण किया लेकिन संसार कभी उनके अंदर विचरण नहीं कर पाया। 'सबकुछ तेरा' नेचुरल स्थिति थी उनकी। करनकरावनहार सबकुछ करा रहा है, प्रत्यक्ष अनुभव था उनका। वे कहती थीं, भगवान जो कुछ हमें करने को कहता है, उसे करने का बल भी दे देता है इसलिये यज्ञ सेवाओं में उन्होंने कभी ना नहीं कहा था।

यज्ञ के लिये सम्पूर्ण वफादार

भगवान ने इस धरा पर प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ रचा और इन महान आत्माओं को उस यज्ञ की जिम्मेदारी दे दी। जब वे सेवाओं पर गयीं तो उन्होंने अपने जीवन का एक नियम बना लिया था कि जो कुछ भी मुझे मिलेगा, उसका आधा मैं महायज्ञ आबू में ही भेजूँगी। उन्होंने यह कार्य जीवन-पर्यन्त किया। वे शिव बाबा के इस यज्ञ के लिये सम्पूर्ण वफादार व ईमानदार थीं इसलिये भी वे भगवान के प्यार की पात्र बन गयी थीं।

शांति की शक्ति

उन्होंने अपने को ऐसा दिव्य पात्र बना लिया था कि भगवान इस पात्र में अपना सबकुछ भर देना चाहता था। शांति की अनंत शक्ति, शांति के सागर भगवान ने उन्हें प्रदान कर दी थी। हमें स्मरण है कि बहुत साल पहले लंदन में संकल्प शक्ति के धनी यूरी गेलर से उनका आमना-सामना हुआ। हजारों लोगों की सभा एकत्रित हुई थी। यूरी गेलर ने सबकी घड़ियाँ रोक दी। सबकी चाबियाँ मोड़ दी। हथेली पर पौधा उगा दिया। सभी यह देखकर आश्चर्यचकित थे। इसके बाद आयी दादी की बारी। उन्होंने पूरी सभा में ऐसी शांति का सन्नाटा स्थापित कर दिया कि सभी के मन रूपी कम्प्यूटर पर शांति की तरंगें प्रतीत होने लगी। सभी के चित्त शांत हो गए। यूरी गेलर ने हार मान ली। ऐसी थी हमारी दादी की शांति की शक्ति।

सेवा का बीज हुआ फलीभूत

विदेशों में उन्होंने 1974 से ईश्वरीय सेवा का बीज डाला। बहुत समय तक फल ही नहीं निकला। परंतु ना तो वे निराश हुईं, ना हिम्मत हारीं। उन्होंने अपनी योग तपस्या की शक्ति से देवकुल की आत्माओं का आह्वान किया। लोग आने लगे, संख्या बढ़ने लगी। सेवा का बीज फलीभूत होने लगा। यह उनकी ही देन है कि आज 140 देशों में शिव बाबा का झण्डा लहरा रहा है। हमारी ये संस्था अंतर्राष्ट्रीय संस्था है, ये उनकी ही देन है। हम समझ सकते हैं, इसके लिए उन्होंने कितना परिश्रम किया होगा। वे भूखी रहीं, प्यासी रहीं लेकिन उन्होंने एक विशाल सुदृढ़ संगठन तैयार किया। हमें गर्व है अपनी इस महान आत्मा पर, जिसने हमें सबकुछ तैयार करके दिया। निष्काम भाव से ब्राह्मणों का ये सुंदर वृक्ष तैयार करके स्वयं भी भरपूर होकर अपने प्राणेश्वर के पास चली गयी।

महान योगिनी

शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा से उनका सम्पूर्ण स्नेह और समर्पण भाव था। बस गया था उनके चित्त में 'तू मेरा मैं तेरी'। चारों युगों में शायद ही कोई भगवान को ऐसा मिले, जो दादी जैसा उन्हें प्यार करे। जब प्यार के सागर अव्यक्त बापदादा आते थे तो उनके प्यार को देखकर भावविभोर हो जाते थे। वे महान योगिनी थीं। चलते हुए इधर-उधर कभी नहीं देखती थीं, सब उनको ही देखते रहते थे। उनके त्याग की एक मिसाल सबने देखी। उनका संकल्प था कि मेरी मृत्यु के बाद मेरी अर्थी पर कुछ भी खर्च ना हो। कैसा खेल बना, सारे देश में लॉकडाउन हो गया। विदेशों से और भारत से कोई भी नहीं आ पाया। प्रकृति भी आँसू बहाने लगी थी। हवाओं में भी सन्नाटा था। आकाश में भी नमी थी। प्रकृति को भी लगा कि उसे भी सहारा देने वाला कोई चाहिए और बिना कुछ खर्च हुए उनका अंतिम संस्कार हो गया।

दिव्य बुद्धि की धनी

दादी जानकी जी पढ़ी-लिखी नहीं थीं क्योंकि अब से 100 वर्ष पहले नारी शिक्षा का इतना प्रचार-प्रसार नहीं था परंतु आज अनेक स्कॉलर्स उनके जीवन पर पी.एच.डी. कर सकते हैं। अमेरिका के वैज्ञानिकों ने उन्हें मोस्ट स्टेबल माइंड (सम्पूर्ण स्थिर बुद्धि) का टाइटल दिया था। ज्ञानीजन समझ सकते हैं कि अपने मन को सम्पूर्ण एकाग्र वही कर सकता है जिसे दिव्य बुद्धि प्राप्त हो। उनके पास डिग्रियाँ नहीं थीं लेकिन वे बहुत बुद्धिमान थीं। अनेक डिग्री प्राप्त लोग उनसे सलाह लेने आते थे। विज्डम डिग्रियों से नहीं, ईश्वरीय ज्ञान से प्राप्त होता है।

त्याग भी करता था नमस्कार

उनके अंतिम तीन-चार वर्षों में मुझे उनके पास जाने का अनेक बार अवसर मिला। यद्यपि वे कुछ ज्यादा नहीं बोलती थीं पर हम वहाँ से परम आनंद से भरपूर होकर आते थे। वो खुशी और संतुष्टता कई दिनों तक हमारे मन पर रहती थी। उनको देखकर मन अनेक प्रेरणाओं से भर जाता था। उनमें सबको साथ लेकर चलने की कला थी। उनके सामने बैठकर हमें भी उन जैसा त्यागी बनने की तीव्र प्रेरणा जागृत हो जाती थी। जब हम थक जाते थे, तब हम उनको याद करते थे कि वे इतनी आयु में भी कितनी अथक हैं और हम भी चार्ज हो जाते थे। त्यागी तो वो इतनी थीं कि त्याग भी उन्हें नमस्कार करता था। उनके त्याग और तप के बल से हम सभी आज सुखपूर्वक जी रहे हैं। लोग कहते थे कि दादी जानकी जी हमारे जान की की (चाबी) हैं।

बहुत याद आओगी आप हमें

हम दादी जी की छत्रछाया में 50 वर्ष रहे। उनका प्यार व पालना प्राप्त की। हमने उनसे बहुत कुछ सीखा। बाबा जब अव्यक्त हुए तो दादीजी बहुत समय मधुबन में रहती थीं। उनकी क्लासेज हमारे लिए गाइड लाइन बन गयी। उनके जीवन की अमिट छाप जीवन पर पड़ गयी। दादी माँ बहुत याद आओगी आप हमें। आपके द्वारा दिए जाने वाले पाँच बादाम, एक सेब, एक वरदान और मीठी टोली सदा ही हमें याद आयेंगे। हम आपके रहे हुए सम्पूर्ण कार्यों को पूर्ण करेंगे। यही आपको हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है। ■■■

आश ना की मान की

ब्र.कु. निर्विकार नरायण श्रीवास्तव, मिश्रिख तीर्थ, उ.प्र.

नवयुग विधाता बन गई दादी हमारी जानकी ।
हर समय है याद आती श्वास में भी जानकी ।।

अष्ट रत्नों में से तुमको चुन लिया है बाप ने,
साकार ब्रह्मा के कदम पर चल दिखाया आपने,
तन-मन-धन से हुई समर्पित फिक्र की ना प्राण की।
नवयुग विधाता बन गई दादी हमारी जानकी ।।

विश्व में सेवाएं देकर दादी का तबका मिल गया,
सारे संतों-महन्तों और ऋषियों का सिंहासन हिल गया,
बनकर निमित्त-निर्माण-निर्मल आश ना की मान की।
नवयुग विधाता बन गई दादी हमारी जानकी ।।

दुनिया में रोशन हुई, जो दिव्यता है आपकी,
सारे गुणों को भर लिया, प्रत्यक्षता है बाप की,
गुण-सागर से ज्ञान भरकर बन गई गुण-खान ही।
नवयुग विधाता बन गई दादी हमारी जानकी ।।

आपके दर्शन को सारी दुनिया है तरस रही,
सुख-शांति और प्रेम की रहमत सब पर बरस रही,
प्रकृति भी अंत समय में झुक कर तेरी सलाम की।
नवयुग विधाता बन गई दादी हमारी जानकी ।।

मुश्किल यह है कि हमें भरोसे पे शक है और शक पे भरोसा है

दादी जी ने मरजीवा बनना सिखाया

■■■ ब्रह्माकुमारी संतोष, सायन (मुम्बई)

जब मैं पहली बार मधुवन में साकार बाबा से मिलने आई तो प्यारे बाबा ने मुझे पूना में दादी जानकी जी के पास भेजा। मैंने ज्ञान मुम्बई में मातेश्वरी जगदम्बा से लिया था। मुम्बई में लौकिक परिवार था। मैं लौकिक से दूर जाकर सेवा करना चाहती थी इसलिए बाबा ने पूना में भेजा। उस समय मेरी आयु 16-17 वर्ष के बीच थी।

खुद के पुरुषार्थ में बहुत लगनशील

पूना में जब दादी जी के साथ रही तो दादी ने, अलौकिक जीवन कैसा होता है, इसकी बहुत अच्छी ट्रेनिंग अपने कर्मों के द्वारा मुझे दी। दादी जी औरों को ऊँचा उठाने में बहुत मेहनत करती थीं परन्तु खुद के पुरुषार्थ में भी बहुत लगनशील थीं। उस समय दादी जी के पास कमला बहन (हाँगकाँग), सुन्दरी बहन, सरला बहन और मैं रहते थे। दादी जी की सहनशक्ति को उस दौरान हमने देखा। मकान मालिक ने आधा घर अपने पास रखा था और आधा किराये पर दिया था। वह चाहता था कि हम घर छोड़ दें इसलिए वह यहाँ तक करता था कि हमारे वाले पोर्शन में अण्डे के छिलके तक फेंक देता था। हमें बहुत खराब लगता था। दादी जी कहती थीं, तुम ध्यान मत दो, स्वत: ठीक हो जायेगा। दादी उसे शुभ भावों का योगदान देती थीं और हमें भी ऐसा करने को कहती थीं। एक बार दादी जी और एक बहन सेवा पर गईं थीं। मैं और कमला बहन सेवाकेन्द्र पर थीं। मकान मालिक ने बाहर पड़ी हमारी चारपाई जला डाली। मैं तो रोने लगी। दादी आईं तो हमने सब सुनाया। दादी ने कहा कि कोई बात नहीं, जल गई तो जल गई। इस प्रकार अनेक विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हुए भी दादी जी अचल-अडोल रहती थीं।

कोर्स (साप्ताहिक पाठ्यक्रम) कराना सिखलाया

हम देखते थे कि दादी अमृतवेले उठकर बहुत प्यार से बाबा को याद करती थीं। हम लोग भी उठते थे परन्तु नींद का असर ज्यादा होता था। फिर दादी चाय बनाती थीं और आकर आवाज देती थीं, चाय गरम, चाय गरम, फिर हम उठकर भागते थे। शर्म आती थी कि अरे! दादी ने चाय बनाई। दादी जी भोजन भी बहुत अच्छा बनाती थीं। मैंने दादी जी से पूछा कि मैं कौन-सी सेवा करूँ? तो कहा कि तुम हनुमान, महावीर हो, तुम्हारा काम है मूर्च्छित को सुरजीत करना। तो जो मातायें ईश्वरीय मार्ग में थोड़ी ढीली हो जाती थीं उनके घरों में जाकर मैं ज्ञान सुनाती थी और उन्हें रिफ्रेश करती थी। दादी जी ने मुझे कोर्स (साप्ताहिक पाठ्यक्रम) कराना सिखलाया। नये भाई-बहनों को जब मैं कोर्स देती थी तो दादी निगरानी करवाती थीं कि कैसा समझा रही है। कोई गलती होती थी तो प्यार से सुधार करवाती थी। दादी ने भोजन में सब कुछ खाना सिखलाया। पहले हमारी पसन्द, नापसन्द होती थी कि ये खाना है, ये नहीं खाना है। दादी कहती थी कि रचयिता ने जो बनाया है, वो खाना ही है।

मैं ब्रह्मावत्सों में विशेष ब्रह्मावत्स हूँ

कभी-कभी दादी एक कोने में चुपचाप बैठी होती थीं, मैं पूछती थी कि आप यहाँ क्या कर रही हैं? दादी कहती थीं कि मैं ज्ञान को कूट (विचार सागर मंथन) रही हूँ। काफी समय दादी के साथ रहने के बाद बाबा ने मुझे मुम्बई (सायन) में ब्रजेन्द्रा दादी के पास भेज दिया। जब दादी के पास से मुम्बई आने का कार्यक्रम बना तो मैंने दादी जानकी जी से पूछा कि दादी, मैं क्या पुरुषार्थ करूँ? दादी ने कहा, एक बात याद रखना, मैं ब्रह्मावत्सों में विशेष ब्रह्मावत्स हूँ। दादी ने कहा कि यह याद रखोगी तो आपमें विशेषतायें आती जायेंगी। दादी जी की यह शिक्षा जीवन में बहुत काम आई है। दादी जी का त्याग देखकर हम भी बहुत कुछ सीखे हैं। दादी ने मरजीवा बनना सिखाया, वारिस तैयार करना सिखाया, दादियों के उपकार हम कभी नहीं भूल सकते। दादी जी को दिल से श्रद्धासुमन समर्पित। ■■■

फोटो पेज

दादी जानकी जी का
अलौकिक व्यक्तित्व

■■■ ब्रह्माकुमार राजू, मुरली विभाग, मधुवन

त्याग, तपस्या और सेवा की प्रतिमूर्ति, देश-विदेश में परमात्म सन्देश की पताका (ध्वज) फहराने वाली, सबके दिलों पर राज्य करने वाली दादी जानकी जी के अलौकिक व्यक्तित्व ने हजारों, लाखों भाई-बहनों के दिलों पर अपनी अमिट छाप डाली है। वे परमात्मा की सन्देशवाहक, एकनामी, एकॉनामी और एकव्रता का अवतार रही। स्वयं भगवान ने उन्हें रमता योगी का टाइटल दिया था। जब सन्देश-पुत्रियों के द्वारा सभी समर्पित भाई-बहनों को अलौकिक नाम मिले, तो भी उनके नाम में कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ। साकार बाबा उन्हें प्यार से राजा जनक कहकर पुकारते थे। मीठी जगदम्बा माँ भी उन्हें प्यार से कहती थी, आप तो विदेही जनक हो। वैज्ञानिकों ने आपको विश्व में सबसे एकाग्र मन वाली स्थितप्रज्ञ महिला के खिताब से नवाज़ा।

अथक बन की सेवायें

ब्रह्माकुमारीज़ का कारवां 14 वर्ष की तपस्या के पश्चात् कराची से माउण्ट आबू में स्थानान्तरित हुआ। उसके पश्चात् ईश्वरीय सेवाओं के प्रारम्भ में आपने भारत के विभिन्न प्रान्तों में अथक बन सेवायें की, रमता योगी बन चारों ओर भ्रमण करते हुए अनेक सेवाकेन्द्रों का प्रारम्भ किया। कोई भी साधन-सुविधायें न होते हुए भी कई-कई किलोमीटर पैदल चलकर, रिक्शों में, बैल-गाड़ियों में बैठ-बैठकर दिल्ली, पंजाब, बंगाल, महाराष्ट्र आदि कई प्रान्तों में अनेकानेक भाई-बहनों को बाबा का वारिस बनाया, उनका स्नेह एक यज्ञपिता और बेहद यज्ञ से जुटाया।

आप बचपन में दादा वासवानी के सत्संग में जाती थी, उनसे भी आपका बहुत स्नेह था इसलिए सिन्धी समाज की विशेष सेवा के लिए बाबा ने आपको पूना में भेजा। आपने अनेक सिन्धी भाई-बहनों को ज्ञान में चलाया। उन्हें बाबा के समीप लाया, उनकी भ्रांतियाँ दूर की। फिर वहाँ से ही विदेश की सेवाओं का शुभारम्भ हुआ।

टीचर्स ट्रेनिंग देने के निमित्त बनी

आप दीदी मनमोहिनी जी की बहुत नज़दीक स्नेही सखी थी। बाबा ने अव्यक्त होने के कुछ दिन पहले ही आपको कहा था, बच्ची, आपके लिए मैं यहाँ पाण्डव भवन में ट्रेनिंग सेन्टर बनवा रहा हूँ, आप यहाँ रहकर टीचर्स को ट्रेनिंग देना। बाबा के अव्यक्त होने के पश्चात् जब टीचर्स ट्रेनिंग के कार्यक्रम शुरू हुए तो आप और दादी चन्द्रमणि जी विशेष सभी को ट्रेनिंग देने के निमित्त बनी। उस ट्रेनिंग से पालना ली हुई बहनें आज पूरे भारत में अपनी बेहद की सेवायें दे रही हैं।

मेरा व्यक्तिगत दादी जी से मिलना सन् 1972 में हुआ। दीदी मनमोहिनी जी ने ही मेरा परिचय दादी जी से करवाया। आप ज्ञान-रत्नों की खान थी, बाबा की मुरलियों पर गहन मनन-चिंतन करके ज्ञान की क्लासेज़ करवाती थी। दीदी मनमोहिनी जी मुझे कहती थी, आप दादी जानकी जी की क्लासेज़ को सुनो और उनके नोट्स बनाकर मुझे दो। दादी जी की क्लासेज में हमें हमेशा ही कोई न कोई नवीनता मिलती थी। उनके दिल में जो बाबा के प्रति प्यार था, उनके जो अपने अनुभव थे, वे सब सुनने और नोट्स लिखने का सौभाग्य मुझे मिला।

पिरोया एकता के सूत्र में

उसके बाद दादी जी विदेश सेवाओं पर गई और लण्डन में रहकर अपनी योग तपस्या के बल से पूरे विश्व में सेवाओं का विस्तार किया। भले आप अंग्रेजी भाषा नहीं जानती थी लेकिन आपके पास रूहानियत का बल था। ज्ञान की पालना के साथ-साथ आपसे जो सच्चे नि:स्वार्थ रूहानी स्नेह की पालना मिली, उससे विदेश की सेवाओं का विस्तार हुआ। आपने देश, भाषा, धर्म की सभी हदों से पार रहकर सबको एकता के सूत्र में पिरोया और प्रभुप्रेम का दीवाना बना दिया।

मेरे ऊपर एक पैसा भी खर्च न हो

साकार में मीठे बाबा ने कई बार कहा है कि जनक बच्ची के पास बहुत अच्छे-अच्छे जवाहरात हैं, वह दान करने के बिना रह नहीं सकती। दादी जी को यह लक्ष्य पक्का रहता था कि जब तक मैं किसी को ज्ञान नहीं सुनाऊंगी तब तक नाश्ता नहीं करूंगी। उन्होंने स्थूल साधनों की परवाह नहीं की, एक-दो ड्रेस साथ में ली और सेवाओं पर निकल गई। आपने बाबा ही हर आज्ञा को सिरमाथे रख, सदा हाँ जी कहा और सम्पूर्ण वफादार, ईमानदार बनकर रही। अगर कोई कुछ सहयोग देता तो आप बाबा के पास यज्ञ में पहले भेजती। आपका लक्ष्य रहता, मेरे ऊपर एक पैसा भी खर्च नहीं होना चाहिए। आपकी यही भावना रही कि मेरी अर्थी पर भी खर्चा नहीं होना चाहिए, फूल मालायें भी नहीं चढ़नी चाहिएँ। बाबा ने आपकी इस आश को भी पूरा किया।

मेरा कोई काम बाकी न रहे

आपकी बुद्धि में सदा यही रहता था कि कभी भी यह पुराना शरीर छूट सकता है। वे कहती थी, मैं रात को सोती हूँ, सवेरे उठूंगी या नहीं इसलिए मेरा कोई भी काम बाकी नहीं रहना चाहिए। मेरे शरीर छोड़ने के बाद, मेरी अलमारियों में किसी को एक रुपया भी नहीं मिलना चाहिए इसलिए जब भी कोई उन्हें यज्ञ के लिए कुछ सहयोग देता तो वे तुरन्त एकाउन्ट डिपार्टमेंट के प्रभारी को बुलाकर उन्हें सौंप देती और अगर कोई जरूरी पत्र आदि होते, जिनका जवाब देना होता तो तुरन्त मुझे बुलाती या पोस्ट मेरे पास भिजवा देती और कहती कि इसे मेरी तरफ से अभी-अभी जवाब दे दो। इससे दिखाई देता था कि दादी जी सबसे उपराम, न्यारी-प्यारी और कर्मातीत स्थिति में सदा रहती थी।

सदा हल्की रहती थी दादी जी

दादी प्रकाशमणि जी के साथ रहकर, दादियों के नाम से आने वाले सभी पत्रों का जवाब देने और मुरली, पत्र-पुष्प आदि भेजने की जो सेवायें मैं कर रहा था, वही सेवायें दादी जानकी जी के साथ भी करने का मुझे सौभाग्य मिला। इससे उनके अन्दर की भावनाओं को समझने का मुझे बहुत सुन्दर अवसर मिला। दादी जी सदा हल्की रहती थी, कितनी भी वे किसी के साथ व्यस्त हों, मेरे जाते ही कहती थी, जरूर इसका कोई जरूरी काम होगा इसलिए पहले मेरे से बात कर लेती। उनके पास जो भी पत्र आते, या कोई की बीमारी का समाचार आता तो मुझे बुलाकर उनके प्रति पत्र लिखने के लिए कहती। कभी-कभी ऐसे ही 10-12 पत्र एक साथ नाम ले-लेकर लिखने को कह देती और साथ में कोई न कोई ज्ञान की प्वाइंटस भी सुना देती, फिर कहती, नोट्स नहीं लो, सिर्फ ध्यान से सुनो और जाकर सबको जवाब दो। ऐसे उन्होंने मेरी एकाग्रता को बढ़ाया। फिर अचानक फोन से पूछ भी लेती कि आपने फलानी-फलानी बहन को क्या पत्र लिखा है, मेरे पास लेकर आओ। चेक करती और कहती, तू बहुत वन्डरफुल है, दादी के दिल को भी जानता है, जो मेरे दिल में था तुमने वही लिखा है, बहुत अच्छा। ऐसे प्रोत्साहन देकर उमंग-उत्साह बढ़ा देती। जब भी उनके नाम से लिखा हुआ पत्र पढ़ने के लिए उन्हें भेजता, चाहे वे किसी भी देश में हों, पत्र पाते ही उसे पढ़ती और तुरन्त जवाब देती। अगर कभी कुछ एड कराना होता तो इशारे में कहती, इसमें यह बात भी कहीं डाल दो तो अच्छा है। दूसरा कोई अगर उनके नाम से सन्देश या लेख आदि लिखता, तो कहती, पहले इसे राजू को दिखाओ, इतना उनका मुझ आत्मा में विश्वास रहा।

दादी जी को अव्यक्त बापदादा ने कहा था, बच्ची गुणों का दान करती है। दादी जी मुख से कहने की बजाए अपने हर कर्म से गुणदान देकर सबको गुणवान बना देती थी। बड़ी आयु के कारण कैसी भी उनकी तबियत हो लेकिन अमृतवेले का योग और शाम के समय क्लास में आकर आधा घण्टा योग कराना फिर क्लास कराना, यह उनकी दैनिक दिनचर्या रही।

व्यर्थ बातों को न तो सुना, न कभी सुनाया

दादी जी से कभी कोई पूछते, दादी जी, इतनी बड़ी आयु में आपके पास इतनी एनर्जी कहाँ से आती है! तो दादी कहती, मैं अपनी एनर्जी व्यर्थ बातों में खर्च ही नहीं करती हूँ। मैंने देखा, कभी किन्हीं पत्रों में भी यदि निगेटिव बातें हों, तो दादी कहती, इसे छोड़ो, ज्ञान-रत्नों की लेन-देन करो। कभी भी उन्होंने किसी की व्यर्थ बातों को न तो सुना, न कभी सुनाया। कहती थी, मेरे कान ऐसे हैं जो कुछ भी सुनाई नहीं देता। मैं व्यर्थ तो सुनती ही नहीं हूँ। इस प्रकार, बहुत कुछ दादी जी से सीखा है, उनकी शिक्षायें सदा हमें इस ब्राह्मण जीवन में आगे बढ़ाती रहेंगी। उनके पदचिन्हों पर चलकर बाबा के कार्य में हम सदा सहयोगी बनकर रहे हैं, रहेंगे। यही मेरी उस महान दिव्य आत्मा प्रति स्नेह श्रद्धांजलि है। ■■■

जब समझाने के लिए कुछ बाकी न रहे तो इसका मतलब है कि अब समझने के लिए बहुत कुछ है

दिल की मित्र दादी जी

■■■ ब्रह्माकुमारी गोपी बहन, लंदन

एक बार हमने बड़ी दादी जी से पूछा कि दादी जी, बाबा आपको क्यों इतना प्यार करते हैं? तब दादी जी ने बताया, मेरे ये नेत्र कभी भी, किसी व्यक्ति या वस्तु में डूबे नहीं हैं, मन में सिर्फ एक बाप है, दूसरा ना कोई। थोड़े समय के बाद हमने यही प्रश्न दादी गुलजार जी से भी पूछा कि बाबा क्यों आपको इतना प्यार करते हैं? तब दादी जी ने जवाब दिया, बाप मेरे संस्कार में है और बाप मेरा संसार है। कुछ समय के बाद जब हम लंदन वापस गए तब हमने दादी जानकी जी से भी यही प्रश्न पूछा कि बाबा क्यों आपको इतना प्यार करते हैं? तब दादी जी ने यही जवाब दिया कि बाबा का हर डायरेक्शन जो मुरली में आया, उसे हमने अमल में लाया, बाबा को फॉलो करते हुए वफादार-ईमानदार और फरमानबरदार बन कर रही हूँ।

इन दिनों दादी जानकी जी की बहुत सारी यादें मैंने मर्ज कर दी हैं क्योंकि वे इमर्ज होती हैं तो दिल भर जाता है। फिर भी कुछ यादें जो मन के पर्दे पर उभर रही हैं, सुना रही हूँ –

दादी जी का प्यार ज्ञानयुक्त था

बड़ी दादी अंदरूनी और बाहरी दोनों रूपों से स्नेह देती थी, कभी बाँहों में लेती थी, कभी चुंबन लेती थी लेकिन दादी जानकी ऐसे नहीं करती थी। दादी जानकी का ज्ञानयुक्त प्यार हमने प्रैक्टिकल महसूस किया। बात उन दिनों की है जब ऑक्सफोर्ड रिट्रीट सेंटर की शुरुआत थी। शुरू-शुरू में तो सब काम हमें अपने ही हाथों करने पड़ते थे। एक दिन रसोई का काम समेटते-समेटते 11:00 बज गए थे। मेरे सिर और पेट में थोड़ा दर्द था। मैंने सोचा, मैं कमरे में जा करके आराम करूंगी लेकिन कमरे में जाने का रास्ता दादी जी के कमरे के आगे से होकर गुजरता था और दादी जी के कमरे का दरवाजा हमेशा खुला रहता था। मैंने सोचा, में गर्दन नीची करके वहां से गुजर जाऊंगी और मैंने ऐसा किया भी लेकिन जैसे ही मैं वहां से गुजरी, पीछे से दादी की आवाज आई, गोपी। मैं दादी के पास चली गई। दादी एक समूह के साथ बैठी थी। दादी उन्हें बहलाती रही, मुझे कहा, टोली लेकर के आओ, ऐसे ही 10 मिनट बीत गए। मैं सोचने लगी कि दादी ने मुझे यहां क्यों बुलाया? जब समूह के लोग चले गये तब दादी ने मेरी तरफ देखा और पूछा, आप ठीक हो? मैंने बोला, दादी, मैं ठीक नहीं हूं, थोड़ा सिरदर्द और थोड़ा पेटदर्द है। दादी ने कहा, मुझे वाइब्रेशन पहुंच गया था इसीलिए आपको बुलाया और दादी आपको एक रहस्य बताना चाहती है कि जब भी आप रेस्ट के लिए जाओ तो कभी भी सिर से भारी हो करके नहीं जाओ, अपने आप को हल्का करके जाओ। अब आप हल्के हो गए हो, अब जाकर के सो जाओ। दादी की बात सुनकर ऐसा महसूस हुआ कि कोई माता भी अपने बच्चों को शायद ऐसा मार्गदर्शन ना दे सके।

दादी जी से बाबा के प्यार का अनुभव

दादी जी से बाबा के प्यार का बहुत अनुभव होता था। एक बार हम ज्ञान सरोवर में युवाओं के कार्यक्रम के लिए आए हुए थे। उस दिन सत्गुरुवार था और सुबह की मुरली क्लास के बाद 10:00 बजे कार्यक्रम शुरू होने वाला था। समय की कमी के कारण मैंने सोचा कि आज मैं नाश्ता नहीं करूंगी, भोजन जल्दी कर लूंगी। मैं विष्णुपुरी से निकलकर मेडिटेशन हॉल की तरफ जा रही थी और सामने से दादी जी आ रही थी। दादी ने मुझे देखा और हाथ के इशारे से कहा, इधर आओ। फिर पूछा, नाश्ता किया? मैंने कहा, दादी, 10:00 बजे कार्यक्रम शुरू है, वहां पहुंचना है। दादी ने फिर पूछा, नाश्ता किया? मैं चुप हो गई। फिर मेरा हाथ पकड़कर एकदम साइलेंस में मुझे डाइनिंग में ले गई, अपनी प्लेट लेने से पहले दादी ने मुझे नाश्ता खिलाया। उस समय मुझे

ऐसा महसूस हुआ कि अव्यक्त बापदादा अपनी बाँहों को मेरी बाँहों में डालकर मुझे खाना खिला रहे हैं। जब तक मैंने नाश्ता पूरा नहीं किया तब तक दादी ने अपना नाश्ता शुरू नहीं किया।

न्यारी-प्यारी पुरुषार्थी

बहुत साल पहले, ऑक्सफोर्ड में एक बार दादी का इंटरव्यू लेने के लिए नेविल भाई बैठे थे। मैं अनुवाद कर रही थी। ब्रायन भाई भी साथ में बैठे थे। नेविल भाई ने दादी से प्रश्न पूछा कि आप ब्रायन भाई को 25 साल से अधिक समय से जानती हो, इनकी विशेषता बताओ। दादी ने तुरंत स्पष्ट उत्तर ना दे करके यही कहा कि आप देख तो रहे हो, कितनी सेवा कर रहा है। दो-तीन मिनट के बाद नेविल भाई ने फिर कहा, दादी, आप स्पष्ट बताओ कि ब्रायन भाई की यह विशेषता है। दादी ने तब कहा, मैं क्यों इसकी विशेषता बताऊं? आप देख रहे हो, बाबा कैसे इसको यूज़ कर रहा है, विशेषता बताना मेरा काम नहीं है। आज अगर दादी ब्रायन की विशेषता बताएगी तो कल ब्रायन को हक मिलेगा दादी की कमजोरी बताने का। दादी को संबंधों के ऐसे खेल में ज्यादा जाना नहीं है। इस प्रकार, मैंने देखा कि दादी एक न्यारी-प्यारी पुरुषार्थी थी, सभी के बारे में सोचती थी पर किसी की सोच में फंस नहीं जाती थी।

समय, श्वास, वाणी, शक्ति सब सफल करते देखा

दादी जी ने इतनी लंबी उमर पकड़ी, उसके पीछे भी दादी जी का एक सिद्धांत था। सिद्धांत यह था कि हमने कभी भी दादी जी को समय, शक्ति या वाणी को व्यर्थ गँवाते नहीं देखा। जिन दिनों शांतिवन बन रहा था उन दिनों दादी जानकी को ऊपर पांडव भवन से नीचे शांतिवन दिन में दो-तीन बार भी आना-जाना पड़ता था। एक बार मैं दादी जी के साथ सारे दिन थी। उस शाम को हम पांडव भवन से शांतिवन आ रहे थे, मैं दादी जी के साथ गाड़ी की पिछली सीट पर बैठी थी और थोड़ी थकावट महसूस कर रही थी। दादी जी अपने ईमेल पढ़ रहे थे। तभी दादी ने कहा, गोपी, डायरी-पेन निकालो, मुझे कुछ लिखवाना है। मैं गाड़ी से बाहर निकली, थोड़ा पानी पीया और अपने शरीर को रिलैक्स करने की कोशिश की। इसके बाद फिर से गाड़ी में बैठ गई। जब मैं गाड़ी में बैठी तो दादी ने आंखों से थोड़ा-सा चश्मा नीचा किया और मेरी तरफ देख कर कहा, आपको ऐसे नहीं होना चाहिए। तब मैंने दादी से कहा कि दादी, आप की जगह कोई और होता तो वह यह पूछता कि आपको पानी चाहिए या कुछ और चाहिए? दादी, आप गाड़ी में खाते हो, पीते हो, सोते हो, पढ़ते हो, आपको कुछ भी नहीं होता, मुझे ऐसे क्यों होता है? दादी हंसने लगी और बोली, आप लोग छोटे-मोटे रूप में समय, शक्ति, वाणी और कर्म – व्यर्थ गँवाते हो। फिर दादी ने मेरा ध्यान खिंचवाया कि दोपहर के भोजन के समय आप व्यर्थ वाचा में आए थे, दादी को वाइब्रेशन पहुंच गया था। मैंने मान लिया। दादी ने कहा कि छोटी-छोटी बातों में जो व्यर्थ शक्ति जाती है वह हमारे शरीर पर एक बोझा बन जाती है, शरीर के ऊपर बुरा प्रभाव डालती है इसलिए आप छोटी-छोटी बातों में थक जाते हो। उस समय मेरे दिल से दादी के लिए धन्यवाद निकला, आभार निकला कि दादी सचमुच दिल की मित्र है, जो हमें ज्ञान की विभिन्न विधियां बता करके स्वयं सुरक्षित रहना और दूसरों को भी सुरक्षित रखना सिखाती है।

हम पिछले 5 वर्षों से बाबा को बोल रहे थे कि बाबा, यह दादी विश्व की दादी है, बाबा, आप हमारी उम्र ले लो और दादी को एक्स्ट्रा उम्र दे दो क्योंकि दादी जो कर सकती है, वह हम नहीं कर सकते हैं लेकिन दादी अपना सब कुछ हमें दे कर के चली गई। दादी ने जो सिखाया उस पर पूरा चलना ही दादी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। ■■■

माँ तुझे सलाम!

ब्रह्माकुमारी गोदावरी, मुलुंड (मुंबई)

जिस प्रकार शिवबाबा ज्ञान के भण्डार हैं, ब्रह्मा बाबा गुणों के भण्डार हैं वैसे आदरणीया दादी जी भी ज्ञान और गुणों की सागर थी। उन के द्वारा मिली हुई अनगिनत दिल को छूने वाली, आगे बढ़ाने वाली तथा बल भरने वाली अनमोल शिक्षाएँ आज भी हृदय को स्पर्श कर रही हैं। हर आत्मा के प्रति उनका समान प्यार, ऊँच भावनाएँ एवं दिल की परवरिश रग-रग को खींच रही है। यज्ञ के प्रति उनका असीम प्यार और श्वासोंश्वास बाबा की याद आज भी हम अनुभव कर रहे हैं। वे अलौकिक माँ के समान प्यार करती थी, दुलार देती थी और दिल का हालचाल पूछती थी।

एक बार दादी जी ने मुझे अपने पास बुलाया और पूछा, गोदावरी, तुम क्या सोच रही हो? दिल में कुछ भी बात हो तो बताओ क्योंकि मैं महसूस करती हूँ कि आपके भीतर कुछ बात जरूर है परन्तु आप बोलती नहीं हो। दादी जी ने जब ऐसा बोला तो मेरी आंखों में स्नेह के आँसू आ गए और शिवबाबा माँ के रूप में दिखाई दिए। मैंने कहा, दादी जी, मैं बाबा के घर में रहती हूँ, सेवा करती हूँ लेकिन दिल में एक बात हमेशा खटकती है कि जब तक मैं दो रोटी की सेवा न करूँ, तब तक मुझे डेढ़ रोटी खाने का कोई अधिकार नहीं है। तब दादी जी की मुस्कराहट के साथ आँखों में असीम स्नेह दिखाई दिया और मुझे गले लगाकर उन्होंने कहा, 'अरे, तुम तो हो ही सच्चे बाप की सच्ची बच्ची, जब बाप तेरा तो यह यज्ञ भी तेरा है। आज से कभी भी यह नहीं सोचना।' फिर दादी जी ने हाथ में हाथ मिलाकर मेरे से ये प्रण करवाया। उसी दिन से मेरे मन का संकल्प समर्थ बन गया तथा यज्ञ के प्रति, बापदादा के प्रति और विश्वसेवा के प्रति उमंग-उत्साह बढ़ने लगा।

दादी जी की विशेषताएँ और शिक्षाएँ जीवन को आगे बढ़ाने में बहुत मदद कर रही हैं। आज साकार रूप में सामने नहीं रही लेकिन उनके वचनामृत को पी करके दिल कहता है, माँ तुझे सलाम! आपने अपकारियों पर भी उपकार किया है। निंदक को भी मित्र बनाया है। सभी के प्रति सद्भावनाओं का स्रोत बहाया है । आपकी रूहानी छवि बापसमान सम्पूर्णता का एहसास करवा रही है। आप गुप्त-से फरिश्ते का स्वरूप ही थी। आपकी कथनी और करनी अनगिनत आत्माओं को यज्ञ-स्नेही बना देती थी। देश-विदेश की आत्माएँ आज भी याद करके दिल से यही गा रही हैं, ओ मेरी माँ, प्यारी माँ, यज्ञरक्षक माँ, शिक्षा सम्पन्न माँ, आप अभी भी हमारे साथ हो और साथ ही रहोगी।

ना भूलेंगे सुबह-शाम, आप रही सबसे उपराम।
किया अकल्पनीय महान काम, ऐसी माँ तुझे सलाम!

सदस्यता शुल्क :

(भारत) वार्षिक: 120 /- आजीवन : 2,000 /-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription: **Bank**: State Bank of India, **A/c Holder Name :** Gyanamrit, **A/c No:** 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile: 09414006904, 09414423949, 02974-228125 **Email:** hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।
मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, **सम्पादक** - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन, **सह-सम्पादक** - ब्र.कु. सन्तोष, शान्तिवन

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :
E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in

देश-विदेश के गणमान्य व्यक्तियों के साथ राजयोगिनी दादी जानकी जी **1**. शंकराचार्य स्वामी ओमकारानन्द सरस्वती एवं अन्य साधु संतो के साथ दादी जी **2**. आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्री श्री रवि शंकर **3**. समाजसेविका मदर टेरेसा **4**. विश्व हिन्दू परिषद के पूर्व अध्यक्ष भ्राता अशोक सिंघल **5**. झारखण्ड की महामहिम राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू **6**. धर्म गुरुओं के साथ दादी जी **7**. समाजसेवी भ्राता अन्ना हजारे **8**.बिशप के साथ **9**. योगगुरु बाबा रामदेव **10**. बौद्ध धर्म गुरु दलाई लामा **11**. जॉर्डन की राजकुमारी बसमा एवं अन्य **12**. अभिनेत्री वर्षा उसगांवकर **13**. दादी जी डॉक्टरेट उपाधी प्राप्त करते **14**.अभिनेत्री प्रियंका चोपड़ा **15**. अभिनेता चिरंजीवी **16**. अभिनेत्री पूनम ढिल्लों

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month & Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : May, 2020.

राजयोगिनी दादी जानकी जी के अव्यक्त आरोहण का दृश्य

If undelivered, please return to Gyanamrit Bhawan, Shantivan, Abu Road, Sirohi-307510